मोतीमाला का चौदहवां रत्न

ब्रज-विनोद

(ब्रजभाषा का एक अपूर्व काव्य)

लेखक—

कविवर श्री भवानीदास

सम्पादक—

रायबहादुर श्री चम्पाराम मिश्र बी. ए.,

एम. आर. एस. बी.

(दीवान छतर पुर स्टेट) सी. आई.

प्रकाशक—

मोतीलाल बनारसीदास,

हिन्दी-संस्कृत पुस्तकविक्रेता,

सैदमिट्ठा बाजार, लाहौर ।

प्रथम संस्करण

मू० ।।।)

सम्पादक की ओर से

मेरी लायब्रेरी में एक प्रति ब्रज विनोद की बहुत दिनों से पड़ी थी। इधर उधर पूछने पर ज्ञात हुआ कि अभी यह पुस्तक छपी नहीं है। अतएव मेरी इच्छा उसे छपवाने की हुई क्योंकि इस में बहुत से पद अच्छे गायन और मनन योग्य हैं। लायब्रेरी की प्रति बहुत अशुद्ध लिखी हुई थी अतएव प्रूफ शुद्ध करने के लिये मैंने कालाकांकर राज्य की लायब्रेरी से एक और हस्त लिखित प्रति प्राप्त की इस प्रति के लिये मैं अपने परम मित्र मि० मदन मोहन सिन्हा, राय बहादुर, एम० बी० इ० बार-एट-ला, डिप्टी कमिश्नर, प्रतापगढ़ इन्चार्ज कोर्ट ऑफ बोर्डस कालाकांकर का आभारी हूँ। इस प्रति के देखने पर मालूम हुआ कि मेरे पास की प्रति बहुत ही अपूर्ण थी उस प्रति में केवल ११६ ही पद हैं इस में हैं २२०। परन्तु यह प्रति भी अपूर्ण है अन्तिम पद अधूरा ही लिखा हुआ है। पहली प्रति की तरह इस प्रति का पाठ भी अशुद्धियों से भरा पड़ा है जहाँ तक हो सका पाठ शुद्ध करने का प्रयत्न किया है। यदि अब भी कुछ अशुद्धियाँ रह गई हों तो प्रार्थना है कि वह मुझ को बता दी जाँय जिस से दूसरे संस्करण में वे ठीक कर दी जाँय।

कुछ कवि के सम्बन्ध में

भवानी दास की जीवनी के सम्बन्ध में मिश्रबन्धुओं ने लिखा है कि उनका जन्म काल १८७५ और कविता काल १९०२ है। किस आधार पर यह अनुमान किया गया है इसका पता नहीं। मिश्र बन्धुओं ने इन को साधारण श्रेणी का कवि माना है परन्तु ऐसा क्यों कहा है इस का भी कुछ पता नहीं। पदों के देखने से तो ये साधारण श्रेणी के कवि नहीं मालूम होते। शिवसिंह सरोज के रचयिता ठाकुर शिव सिंह सेंगर ने भी इन का कविता काल सं० १९०२ के उपरान्त माना है ग्रन्थकार तो पदों के विशेष प्रेमी मालूम होते हैं और कहीं कहीं तो उन्होंने बड़े सरस पद कहे हैं जो ओज और माधुर्य से भरे हैं और उन्होंने अनेक झाँकियाँ भी ध्यान करने योग्य लिखी हैं।

भवानीदास जी की कविता

इस कवि की कविता सूरदास के पदों के समान है। पदों का महत्व हिन्दी साहित्य में बहुत ही ऊँचा रहा है। पिछले युग में ही नहीं इस समय भी भारत के प्रसिद्ध गायक पदों का गाना ही कलापूर्ण समझते हैं। और एक तरह से इस के स्वरताल में, लय और मूर्छना में स्वरों का जो क्रमिक विकास और राग की जो ध्वनि निकलती है, वही राग का प्राण है। संगीत में (गाने, बजाने और नृत्य में) ताल का बड़ा माहात्म्य है। ताल के बिना कोई भी गीत सांगोपांग होही नहीं सकता। वस्तुतः ताल और राग के एकीकरण और एक प्राण होकर वह निकलने का नाम 'गायन' है। प्राचीन संगीतज्ञों ने 'राग' के कई लक्षण किये हैं, परन्तु मेरा विचार तो यह है जो राग या गीत स्रोता के मन को अपनी स्वर लहरी से आनंदित कर सके वही राग है। मालूम होता है भवानी दास कवि होने के साथ ही संगीतज्ञ भी थे। इन के पदों की लहर बड़ी सरस और सुरीली है। उदाहरण के लिये एक पद लीजिये :—

लखौ लखौ स्याम सलौनो लखौ लखौ

मधुरे बैन सुधाते अति प्रिय करि मुख श्रवनन चखौ चखौ।
गुरुजन लाज लोक मर्यादा गुनि मन सो मन नखौ नखौ।
कहे 'भवानी' नंदलाल छवि उर द्रग माँहि रखौ रखौ।

इस में राग का पूरा ठाठ है। स्वरों का आरोह अवारोह भी बड़ा मधुर है। राग की जो तीन जातियाँ बतलाई गई हैं—अर्थात् संपूर्ण, षाडव और औडव। वे तीनों तरह के राग इस पुस्तक में पाये जाते हैं। एक प्रकार से यह कवि, संगीतज्ञों, रसिकों एवं काव्य प्रेमियों के लिये बड़ा ही सुन्दर है।

कविता की दशा में तो एक ही बात कही जा सकती है कि इस की कविता बड़ी ही सरस और कर्णरस मधुर है इस की उत्प्रेक्षाएं भी कई जगह बहुत सुन्दर हैं। एक पद पढ़िए और कवि की उड़ान देखिये—

आली री मन माँहि मोहि साँवरो सुहाई।
जाकी अवलोक सोभा रितुपति सकुचाई।
सुखद मयंक ऊपर, पीत पट यों छवि पाई।
मेचक बार दिये मनो चपला रही छाई।
सीस मुकुट जटित रतन जोत जगमगाई।
मनौ नील शैल शिखर भानु बस्यौ आई।
स्वेत सुमन तुलसी दल रचित माल भाई।
जनु तमाल बिटप लसति बक शुक समुदाई।
मुरली मुखकंज पगन नूपुर ध्वनि लाई।
मुखरित कल कंठ मुखर परम रुच सुहाई।
कहा कहौं कहि न सकत रूप की निकाई।
छकि 'भवानी' निरखि निरखि बार बार जाई।

एक नहीं प्रायः सारे ही पद इसी प्रकार के हैं। शब्दों का माधुर्य पद योजना तो, मालूम होता है, भवानी दास की अपनी ही चीज़ है। पाठक देखेंगे कि कवि ने पुस्तक लिखने में परिश्रम किया है। मैंने पुस्तक के अन्त में शब्दार्थ भी दे दिया है जिस से पाठकों के आनन्द में बाधा न पड़े। यदि इस काव्य से पाठकों को कुछ भी मनोरंजन हुआ तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूँगा।

२५ जुलाई १९३७। चम्पाराम मिश्र

छतरपुर स्टेट,

बुन्देलखंड, सी. आई.

ब्रज-विनोद

गणपति गौरि गिरीश गुरु गोविंद पद सिर नाय ।
गाऊँ गुन गोलोकपति जो प्रकट्यो ब्रज आय ॥ १ ॥
कलि जीवन औलोकि के विषयासक्त मलीन ।
तिन्हहिं उधारन हेतु प्रभु तैसहिं लीला कीन ॥ २ ॥
अबुझ समुझ पथ धर्म के दोऊ लहत प्रमोद ।
गति सुखदाई जीव को यह ब्रजराज विनोद ॥ ३ ॥
एकै नित्य अखंड जो ते वपु धारे दोइ ।
नारि पुरुष को भेद करि राधा मोहन सोइ ॥ ४ ॥

मोहन के संग निरतति राधे ।
अति सुकुमार छबीली नागरि मृदु मुसुकाइ लखत दृग आधे ।
झमकि झमकि पग धरत धरनि पर शुभ भुजलता परसपर काँधे ।
उमगि उमगि गावति मनभावति अगनित राग ताल सुर साधे ।
कबहुँ छवित रूप ह्वै मोहै भ्रमि थिरकति कर पिय कर बाँधे ।
झपटि लपटि बिलसति निजनिज रुचि परम चतुर दोउ रूपअगाधे

एहि झाँकी को तरसति तेऊ जिन अपने मन जोग समाधे ।
दास भवानी सुलभि ताहि जिन मन बच क्रम प्रभु पद आराधे॥५॥

प्रभु मुख जटित मुरलिका बाजति ।
नीरद नील अरुन चपलायुत परम रम्य मधुरे सुर गावति ।
सुनि धुनि मुदित वरहिं जनु राधे अगीणत कला नृत्य के साजति।
उमँगि उमँगि ऊँचे सुर गावति जेहि सुन अमित बेन पिक लाजति।
सुमन सुमन बरसत जनु जल कन कहुँ कहुँ परति भाँति भलि भ्राजति
त्रिविध समीर नीर जमुना को बहति महत अवनी छवि छाजति।
चलुदेखहुसखिरखियहछबि उरअकथअलौकिक अतिहिबिराजति।
दासभवानी प्रेम मगन सखि विविध भांति मनुमुद उपराजति॥६॥

काको वदन सदन छवि केरो ।
बहँसि बहँसि पूछत ललिता सों तू साची कर देइ निबेरो ।
ललिता कहति सुनहुँ पिय प्यारी प्रभु तें शोभित है मुख तेरो ।
दासभवानी समुझ मुदित दोउ परमचतुर कहि तेहि हित तेरो॥७॥

सुखद कदम तर राजत जोरी ।
नवल किशोर निचोररूप के नद नन्दन वृजभान किशोरी ।
तिनके बदन सदन सुखमाके कोटि मदन रति छवि सोउ थोरी ।
चख झख जोरि मोरि मुख बिहँसत करत परस्पर चित चित चोरी ।

श्याम गौर पटपीत नील युत घन दामिन अविचल यक ठोरी ।
मुकुट चन्द्रिका प्रभा भानु जनु भूषन उडगन-युत निकसोरी ।
लखि सब भाँति अलौकिक लीला गति मति भारति की भइ भोरी ।
दासभवानी मति ललचानी चहत दरस यह गुरुहिं निहोरी ॥८॥

मोहन संग राधा प्यारी ।
रूप जलधि के रतन मनोरम कोटि काम रति तिन पर वारी ।
पीत बसन युत स्यामल लोने गोर गात नीले रंग सारी ।
घन दामिनी परस्पर बादे चढ़े एक पर एक सहारी ।
मृदु मुसुकाय मिलाय गात दोउ कछु बतरात बात सुखकारी ।
परमानन्द प्रेमरस साने एक कि द्वै नहिं जात निहारी ।
परमचतुर अतुलित छवि विलसति निज भगतन के अघगनहारी ।
दासभवानी येहि छवि ऊपर बारबार तन मन बलिहारी ॥९॥

कौतुक करत परस्पर दोऊ ।
नन्दलाल वृषभानु-लाड़िली प्रेम चतुरता नहिं घटि कोऊ ।
जिनके रूप सिंधु के आगे कोटि मदन रत छवि लघु सोऊ ।
कबहुँ लाडिली लालन बनि ठनि कबहुँ लाडिली की सम ओऊ ।
अमित कला कौतुकि के करि करि वृन्दावन विलसति छवि जोऊ
जासु चरित ब्रह्मादि देखि कहें चिरंजीव जुग जुग तुम होऊ ।

जोग समाधि दान भव तीरथ बिनहिं अखिल अघ के मल धोऊ ।
दासभवानी पेखि सुछबि यह नेह समेत गेह उर गोऊ ॥१०॥

राधे कहाँ कहौ किन प्यारी ।

मन मोहन के रूप समान्यो आपुहि मानति कुंज-बिहारी ।
देहु बताय दया करि वेगहिं विरह विकल अति मोहि निहारी ।
हा हा करत निहोरत पुनि पुनि मानि लेहु मनुहारि हमारी ।
बिहँसि सखी धाई मोहन पहँ चलि देखहु किन कौतिक भारी ।
राधे राधे ही को ढूँढति आपु भई मन सों बनवारी ।
स्यामहिं लाइ ठाढ़ आगे करि कहती यह वृषभानु-दुलारी ।
दासभवानी लखि सकुचानी कहा भयो मोहि कहत सम्हारी ॥११॥

दधि बेचन आई एक नागरि ।

स्यामहिं लेउ कोऊ मुख भाषत सीस माँहि लीनै दधि गागरि ।
कोउ एक देखि दही हँस पूँछति श्याम मोल कहु मति की आगरि ।
दासभवानी समुझ लजानी श्याम बिबस में कहत उजागरि १२

चलहु सखी खेलिये लाल सँग फागुरी ।
सकल सुखमा सदन निपुन अतिरस कला
जासु छवि लखत मन बढत अनुरागरी ।
अविर मुख मीदि दृग आँजि रंग लीन

करि छीन सब लीजिये पीत पट पागरी।
ताल दे लाल अति छली को लली करि
नाच नचवाय हित गाइये रागरी।
बहुरि भुज मेलि शुभ ग्रीव सुख-सींव पर
केलि सुख लूटिये आजु बहु भागरी।
लट्ट ह्वै भट्ट फिरि निरतिये तासु सँग
जासु बस सिद्ध–गन्धर्व–सुर–नागरी।
ईश अनबद्ध कहि निगम हू अगम जेहि
आइ सो बाँध्यो तम प्रेम के तागरी।
जन भवानी कहत समुझ अवसर सुखद
चलहु सखि वेग करि लाज को त्यागरी॥१३॥

राधिका रसिक छवि आजु अवलोकुरी।
कनक मरकत निरस तडित घन चपल गति
कोटि रति काम दुति दाम को ओकुरी।
रसन भूषन ललित अमित शोभा पलित
कलित दुतिवंत जग बसे करि थोकुरी।
जाहि देखत पलकु बढत मुद को बलकु
मिटत जगत को कलक नाम नहिं शोकुरी।

सहित अनुराग यहि रूप ही पागु सब
जगत को राग तेहि त्यागु गति बोकुरी।
सकल सुखदानि रसखानि दृढ मानि यह
रूप निधि जानि यहि चपल चित रोकुरी ।
मम मनहिं बसि रही जाति नहीं कछु कही
सदृश नहिं जो चही ढूँढ त्रैलोकुरी ।
जन भवानी कहत चहत जे छवि न यह
तिनहिं हतभाग्य गनि भार में झोंकुरी ॥ १४ ॥

अमित छवि आजु व्रजराज पर झुक रही ।
मोर सिर मुकुट अहि अलक कुंडल मकर
बिपुल बपु शशि बदन अमी लगि डकि रही।
भृकुटि धनुसर तिलक जुत निरखि सभय
अति भ्रमरि जनु पुत्रिका कंज दृग लुकि रही।
श्याम बपु पीत पट दाम मुक्तानि जुत
मनहु बक पंक्ति घन तडित लहि रुक रही ।
अधर बंधुक सुमन कुंद कलिका रदन
मधुर सुर मुरलिका मनहुँ पिक कुकि रही ।
किंकिनी कटि सुघर पगनि नूपुर मुखर

मनहुँ नोवति मदनराज की ठुकि रही ।
अकथ सब भाँति अवलोक तिहि बनत सखि
लहत नहिं पार जहँ गिरा मत मुकि रही ।
जन भवानी बड़े भाग ते लाभ यह
वाहि लखि वासना अब न काहु की रही ॥ १५ ॥

देखु सखि सुरुचि शुचि रुचिरता गात की ।
जासु द्युति लखत पटतर न कोऊ जगत
लगत फीकी प्रभा जान हयसात की ।
अतिहि कोमल हृदय सदय अति सै लसत
प्रकट कहि देत छवि गहनि दुजलात की ।
श्याम अभिराम छवि धाम ता पर लसत
रुचित रचना रुचिर विविध गिरधाम की ।
रूप के सिंधु छवि अंग अंगनि लहर बढ़त
लहि तरुनता पवन शुभ प्रान्त की ।
सजति भूषन वसन तासु छवि इमि लसति
तडित उडुगन सहित निशा बरसात की ।
नयन मुख कर चरन सकल—सुखमा—सदन
छीन शोभा लई विपुल जलजात की ।

दृग भवानी चकोरक मुदित चन्दमुख
श्याम स्यामहिं रटति छकित मति चातकी ॥ १६ ॥

कहत नहिं बनत छवि अमित जो मैं लखी ।
रसिक सिरताज ब्रजराज वनराज ते
आजु यहि साज ब्रजकाज वनराज ते ।
श्याम अभिराम वपुकाम सति वारियौ
वदन सुख सदन पर मुकुट अहिअरिपखी ।
चपल कुंडल अलक झलक रज धेनु पद
सुभग भ्रु तिलक कल लोल लोचन झखी ।
विशद सुक तुण्ड सम नासिका जलज स्यों
अधर पर लसत जनु छकित मुख रस चखी ।
पीत पट अंस अवतंस सुमननि विविधि
रुचिर अंगनि लसे कांख लकुटि रखी ।
झटपटी बेर अटपटी कर मुरलि धुनि
लटपटी सुगति लखि लजत मुक्ता मखी ।
जन भवानी निरखि पुलकि ताकी दसाहिं हरषि-
युत सकल चलीं चित करि सत सखी ॥ १७ ॥

तैं मोहन की सेज लुटीरी ।

प्रमुदित मुख तन हरष विवश अति लोक लाज के जाल छुटीरी ।

शिथिल गात कुसुमावलि विथिलित उर मुक्तन की माल टुटीरी ।

नखरद छतविलसत अँग अंगनि प्रगटत सँग घनश्याम जुटीरी ।

धनि मनमोहनि धनि विन्द्रावन धनि कुंजनि की विहृत कुटीरी ।

जहाँ तु जाइ विविध सुख विलस्यो जेहि खिसकत सुरपुर वधुटीरी ।

छैलछबीली छल बस कीन्हों है तो यह विसकरन बुटीरी ।

कहत भवानी तू बड़भागिनि नयन खि सुनि छबि दीन घुटीरी १८

मैं मोहन के साथ बिकानी ।

सुधि बुधि गई एक चितवन

में काहू मोहि सिख दे न सयानी ।

बिनु देखे छिन पल मम गति इमि

फनि मनि हीन मीन बिनु पानी ।

कोउ किन नाम धरहु किन त्यागहु

मोंहि न अब डर कछु कुल कानी ।

मोहन मोहन रटत अहरनिश

और सुहात न बोलत बानी ।

वह घन श्याम माधुरी मूरति

नख सिख सो उर आनि समानी ।
ताते तुमहिं निहोरत पुनि पुनि
मम जीवनहिं मिलावहु आनी ।
दास भवानी तुमहिं पुण्य बड़
जो मैं निज प्रिय पाइ जुडानी ॥ १६ ॥

मो मन मूरत श्याम बसी है ।
जमुना तट वंशीवट के तर आजु लाल छवि अमित लसी है ।
ठाठ त्रिभंगी मुरलि बजावत गावत राग तान सरसी है ।
मोतन हेरि मंद हँसि सजनी बासि कीन्हों कुल कानि नसी है।
जित देखत तित वह मन मोहन जाको मुख लखि लजत शशी है ।
अंग अंग में उठत तरंगें रूप सिन्धु जहँ सोम गसी है ।
तन मन वारि दियो मैं उन पर अब मोको डर कौन हँसी है ।
दासभवानी सो बड भागी जाकी मति यह जाल फँसी है ॥२०॥

मेरे उर बसी छवि नटवर की ।
मन भावति कछु कह न सकत
ज्यों मूक मधुरता बंद सक्कर की ।
दच्छिन चरन वाम धरि ठाडे
तिन पर विलसत छवि नेवर की ।

जनु अति रुचि कमलन को सेवति
भृँगज मति महा मुनिवर की ।
लाल काछनी ऊपरि राजति
कलित किंकिनी चामीकर की ।
मनहुँ कोकनद दल श्रेणी पर
पंक्ति पराग भरी मधुकर की ।
श्याम रूप पट पीत सुहावन
तापर कवि छवि मुक्तालर की ।
जनु बक अवलि तडित अविचल लखि
डरि थकि रही ओट जलधर की ।
मृदुल गात गिरधातु रंग मगि
ता ऊपर छवि गुंज निकर की ।
नील सिखर पर लता बिबिध बिधि
इन्द्र वधू तहँ छवि मन हर की ।
कुंडल अलक मुकुट झूमत झुकि
लटक बाम दिशि ग्रीव सुघर की ।
केकी उरग लरत शशि चूसत
रवि सहाय कीन्ही हिमकर की ।

ठवनि त्रिभंगी रंगी चितवन
मुरली अधर चपल गति करकी।
मंजु मधुर सुर जबहिं बजावत
सुनि पलटत गति चर अविचर की।
अपर अंग अनुपम सब जेहि लख
मुदित होत मति सुर विधि हर की।
कहत भवानी तेहिं लखि मोहीं
अब नहिं मोहि खबरि घर वर की॥ २१॥

छैल छबीली नित इत आवत।
रूप रंगीलो रसिक रसीलो निज शोभा रतिपतिहिं लजावत।
मोहि विलोकि रोकि मग राखत भाखत मधुर मन्द कछु गावत।
जोरि जोरि चख मोरि मोरि मुख चोरि चोरि चित मन ललचावत।
मोर पच्छ सिर गुच्छ सुमन के कसि भृकुटी हँसि मदन जगावत।
कैसिक धीर धरों मैं सजनी वंशी धुन मिसि मोहि गुहरावत।
निशिबासर सोवत अरु जागत मदन मनोहर रूप दिखावत।
कहत भवानी लखि सुखदानी भई दिवानी का समुझावत॥२२॥

एक समय ब्रखभानु दुलारी।
बन में जाय अकेली नागरि मोहन को सब साज सँवारी।

लै मुरली अधरन पै धरि के गावत मधुर रागनी प्यारी ।
साँझ समय गोवन के पीछे परम मुदित ब्रज ओर सिधारी ।
गृह कारज अपने सब तजि तजि प्रेमाकुल धाईं ब्रज-नारी ।
जकि सीं रही सकल मन अपने गौर रूप घनश्याम निहारी ।
इक नियराय झपट उर लागी तब हँसि दीन परम सुकुमारी ।
दासभवानी चीन्हि मुदित सब कहैं भले बनि आइ बिहारी ॥२३॥

आजु श्रीराधिका रूप अद्भुत् कियो ।
मोर की मुकुट सिरसि बाँधि लै मुरलिका
कामरी ओढ़े करि लकुटि कर में लियो ।
श्याम पँह जाय कहि तुमहिं बेकाम गनि
आजु नंदराज अधिकार हमकों दियो ।
कोन कह नाम केहि ग्राम में बास तुव
का समुझ नंद ग्रह भार को सोंपियो ।
नाम मोहन सुवन जानि समरथ भयो
निपुन गोपाल बिधि नाहिं हम सम बियो ।
पाइ अधिकार तुम मालिक ही बनि गये
भूलि हम को सदा खाय हमरे जियो ।
बचन सुन चकित पहिचान कर मुदित हुइ

झपटि लपटाय उर परम प्रमुदित हियो ।
जनभवानी सखा सखि लखि चरित
यह परम आनन्द लहि कहत चिरजीवियो ॥२४॥

कहु सखि तू कित ते इत आई ?
कहा कहौं कहि सकत न सजनी
जो छवि आजु दीखि मैं जाई ।
प्रिया लाल दोउ सुखद कदम तर
राजत अमित भाँति छवि छाई ।
बानी हीन नयन नहिं देखो
नयन मुखर नहिं किम सकौं गाई ।
देखत बनत कहत नहि शोभा
सकल अलौकिक द्युत समुदाई ।
लोचन सफल करहु चल देखहु
अति हित तुमहिं समुझि मैं धाई ।
दास भवानी भाग आजु वड़
जेहि देखत त्रैताप बुझाई ॥ २५ ॥

सखि यह मन मोहन सोइ आयो ।
जेहि निज रूप ठगो सरि डारी मेरो मन बोरायो ।

इतते ह्वै गई खोर साँकरी उतते आयो धायो ।
जितहीं झुकी झुको उत आपहु बरक्यौ नहिं बरकायो ।
मारग रोकि विलोकि मोर मुख हँसि के मोहिं हँसायो ।
बाँह गही मैं नाहिं करत रही बर बस कंठ लगायो ।
तबते निशिदिनि कल न परत मोहि कछु जादू सो नायो ।
दासभवानी श्याम सलोने मन दृग में है छायो ॥ २६ ॥

सखि मनमोहन मेरो चित चोरै ।
नित प्रति अलबेलो नट नागर कढ़त आइ यह खोरै ।
कौतुक करि करि बिबिध भाँति के मोहि हेरत दृग कोरै ।
पढि पढि छन्द मनोज बढावत तान मोहि पर तोरै ।
जोहीं लखत धोखे हूँ केहू तबहि चखनि चख जोरै ।
हँसि गहि अधर दसन रस माते अपनो अंग मरोरै ।
बारबार लखि चरित मनोरम मम मन लायो वहि ओरै ।
दास भवानी कह सो जतन मम कहै नन्द किशोरै ॥२७॥

सखि वह आवत छैल छबीलो ।
वर नायक सुख दायक हमरे अतिसे रसिक रसीलो ।
प्रफुलित इन्दीवर तन शोभित अँग अँग सजत सजीलो ।
जाको रूप अनूप बिलोकत परत मार मद ढीलो ।

मंद घुमड पग धरत धरनि गति निदरत गज गरबीलो ।
अधर मधुर सुर वंशि बजावत जेहि धुनि काली कीलो ।
भृकुटी कस हँसि मोहि बसि कर हिय धसि रह्यो नैन नुकीलो ।
दासभवानी तन मन मेरो कियो निज रंग रँगीलो ॥ २८ ॥

है तू कौन कपाट बजावै ।

माधव, ऋतुपति कोनहिं ओसर, बनमाली, बन कुसुमन भावे ।
अहि मर्दन, खग नायक कित हूँ हरि, जो सिंह बेग बन जावे ।
हौं घनश्याम, अवनि किमि बोलत चक्री, घट घर जाय बनावै ।
गिरिधर, कपिद्रोनाचल ल्यायो, हौं गोपाल, बन धेनु चरावै ।
बंशीधर जलचर जमुना तट, धरनी धर, अहिराज कहावै ।
तुम मुख चन्द्र चकोर, मोर मन तजि प्रतिवाद रूप दरसावै ।
राधे हँसि पट खोलि मिले दोउ तिनके चरन भवानी ध्यावै २

बड़ी बड़ी अखिया कटाछे तिरीछी तामें
करद बनावरी असम सर लुक लुकि ।
वक्र भृकुटी अवालि छालि हँसि दुजवर
त्रसित समिट बैठी जँह तँह मुकि मुकि ।
कुराहल अलक सिर मुकट नासिका मोती
चहुँ दिशि शशि मुख शोभा रही झुकि झुकि ।

कहत भवानी कोऊ कैसे सयानी राखै
कोकिल मुरलिका हरत मन कुकि कुकि॥ ३० ॥

पगनि नूपुर कटि किंकनी काछिनी ठटि
तापै पिछोरी दिव्य सोहै पीरे पटकी ।
नीरद सघन श्याम जलज सुमन दास
कुण्डल अलक मानो शोभा रही लटकी ।
तीखे अनियारे दृग भृकुटि तिलक भाल
सीस की झुकनि राजै लटक मुकुट की ।
कहत भवानी वंशी मधुर अधर धरे
मेरे मन बसि रही छवि वरनट की ॥ ३१ ॥

ब्रजराज लाडिली दोऊ मिलि खेलत फाग।
इत उत जुवति नवल छवि आगर उमगति अति अनुराग ।
अविर गुलाल लिये कर झोलिन रँग झरि सावन लाग।
कोउ होरी कोउ सरस मनोहर गावत भरि भरि राग ।
कोउ लै अविर मलत मुख काहु के छीन लेत पट राग ।
डफ मृदंग करताल बजावत नचत लाज करि त्याग ।
पिली लाडिली ओर की सिगरी नट नागर दल भाग ।
कहत भवानी मोहन को गहि फगुआ लीन सुहाग ॥ ३२ ॥

नागर अलबेलो तै मन मोहन साँचो ।
करि निज रूप ठगौरी चोरी मो मन तुव रँग राँचो ।
खर चित बनि यह विहँसन तेरी फंदते को जग बाँचो ।
सुनि मुरली धुनि मधुर मनोहर को अग जग जो न नाँचो ।
मेरे उर लखि अंग अंग तेरे मोद कोलाहल माँचो ।
ह्वै प्रसन्न वर देहि सहौं नहिं कहु विरहानल आँचो ।
तुव पद पंकज प्रीति अनादर जेहि जग को सुख आँचो ।
कहत भवानी चिन्तामन तजि तेहि लीन्हो हठि कांचो ॥३८॥

खेलैं ब्रजललना मनमोहन संग होरी ।
रूप छबीली सजि अलबेली सकल दिनन की थोरी ।
निज निज सदननि तै कढि कढि कै समिटि गई तेहि खोरी ।
जँह मनभावन संग सखन के फाग को साजि सजोरी ।
ताल मृदंग बजावत गावत निज निज रुचि दुहुँ ओरी ।
रँग पिचकारी जलद जनु बरसत चलत गुलाल की झोरी ।
अति उमंग धाई ग्वालन पर नाँई रूप ठगोरी ।
मन मोहन को हँसि गहि लीन्हों बाँधि प्रेम की डोरी ।
छीनि पाग पट लकुट मुरलिका सजी वृषभानु किशोरी ।
तासु वसन भूषन पहिराये मोहन को बरजोरी ।

कोउ दृग आजि गुलाल मलत मुख लावत बदन में रोरी ।
गुलचा ताल देइ कहै नाँचहु भले बने आजु गोरी ।
मोहन कहत छाडि अब दीजै दीन्हें पट जे अजोरी ।
हो तुम प्रेम सदाई बांध्यो तुम सब प्रीतम मोरी ।
फगुआ देउ छुटो कहै मोहन तन मन धन राखोरी ।
कहत भवानी सुनि बानी भई प्रभु मुख चंद चकोरी ॥३४॥

मनमोहन प्यारो होरी खेलन मिसि आयो ।
नटबर वेष सजे अलवेलो अंग अंग छवि छायो ।
ग्वाल बाल सब संग सखा लिये फाग साग सजि धायो ।
अबिर गुलाल उडावत गावत रँग पिचकन बरसायो ।
गोप बधूटी लैकर लकुटी घेरयो वाम न भायो ।
दै गुलाल तिनके मींचे कछु प्यारिहि कण्ठ लगायो ।
कै छल बल छुटो चहत लाडिली बेसर पट अरजायो ।
सखा सखी लै बिहँसत दुहुँ दिशि आनन्द उर न अमायो ।
ललिता जाइ देइ मुख गुलचा हँसि के पियहिं छुडायो ।
कहत भवानी लाल मुदित ह्वै कियो चित चाव सवायो ॥३५॥

ललिता बीन बजावत द्वारे ।
मधुरे सुर गावति परभावति चतुर जगावत प्रीति सम्हारे ।

कहि निशि विगत दीप छवि लीन्हें शशि कर हीन दीन दुति तारे।
अरुन प्रकाश अकास भास भल तमचुर रवमिसि कहत पुकारे ।
त्रिविध समीर सुखद अब डोलत बोलत भृंग मुदित मद भारे ।
कोक कोकनद शोक रहित सब हरष बिबस रवि किरनि निहारे ।
प्रिय प्रीतम सुनि बचन चातुरी मुदित परस्पर नयन उघारे ।
कहत भवानी हँसि उठ बैठे जिन लखि अमित काम रति हारे ३६

नवलवर दंपति राजत भोर ।

नदनँदन वृषभानु नन्दिनी अतिशय रूप निचोर ।
झुकि झुकि परत नयन आलस वस अंगनि उठत मरोर ।
सम्हरि परस्पर बदन विलोकत जैसे चन्द चकोर ।
उमगत उर निशि सुरति सुरति करि हँसत अधर दृग कोर ।
हँसि हँसि धरत भुजनि वर अंसनि उभय सु छवि चित चोर।
बचन कहत रस रीति प्रीति के बोल मधुर थोर थोर ।
दास भवानी छवि अवलोकत लूटत मुद मन मोर ॥ ३७ ॥

आजु नवल नट ठाट ठटतु है ।

मृग मद घोर खौर दै भालहि
अंगनि और कटाव कटतु है ।
स्वच्छ सुमन के गुच्छ श्रवन सिर

पाग लट पटी पेंच बटतु है ।
सो वंसी मोहनि कर धारत जाकी
धुनि सुनि अचर नटतु है ।
अंग अंग सब परम मनोहर पटतर
उपमा कोउ न अटतु है ।
जाको रूप अनूप बिलोकत अमित
मान मद मदन छटतु है ।
हौं हटकति हटको नहिं मानत निपट
हठीलो मन न हटतु है ।
दास भवानी देखत मोह्यो श्याम
श्याम नित रटनि रटतु है ॥ ३८ ॥

मोंहि तिरीछी तकनि तकतु है ।
हँसि हँसि करत अमित मग कौतुक मन ललचावन बचन बकतु है।
हौं सकुचित गुरुजन पुरजन डर वह अति ढीठन काहु जकतु है ।
बगर डगर में लँगर अनोखो बारबार मेरो बदन झुकतु है ।
जाकी अंग अंग छबि बरनत सहस शारदा शेष थकतु है ।
सोई भट्ट लट्टू मेरे पर मोमन कब धरि[1] धीर सकतु है ।
चौ चँद होत यहै घर घर बृज अब न ठकायो प्रेम ठकतु है ।
कहत भवानी तजि सब डर अब मो मन खुलि वाके रूप छकतु है

---

१ यह पाठ अशुद्ध है ।

श्री वृषभान सुता छवि आभीर
बनि ठनि आजु चली अलबेली।
नव सत साजि पहिरि द्वादश वर
प्रफुलित फलित कनक जनु बेली।
दच्छिन कर वर कमल फिरावत
वाम सु भुज धरि अंग सहेली।
गावत सुर कल कण्ठ लजावत
प्रमुदित परम मनोहर हेली।
प्रभु पँह जाइ नचाय दृगन कहँ
मृदु मुसुकाइ कण्ठ भुज मेली।
जनु शृंगार तमाल सुतरु पर
कलप लता छवि की रही फैली।
हँसि हँसि कहति बचन तन घसि
घसि लूटत मोद लाज पथ पेली।
दास भवानी प्रिय पीतम छवि
वित उर धरत सकोलि सकेली॥ ४०॥

नटनागर छवि आगर की सुखमा नहिं जात कहीरी।
रूप मनोरम अकथ सकल विधि उपमा अवर नहीं री।

लाल पाग सिर पेंच जरक सी चन्दन खोर ठहीरी ।
जनु प्रदोस रवि प्रभा अघन घन चन्द कला उलहीरी ।
मानो नीला चलति सुर सरिता करि युग धार वहीरी ।
अरुन अधर नासिक मुक्ता जुत वंशी मुख रतहीरी ।
बिम्बाफल पर शुक मराल ढिंग कोकिल कुहिक रहीरी ।
अवधि होत बश छवि अवलोकत मति नहिं जाति गहीरी ।
दास भवानी लखत मगन गति जीवन जन्म सहीरी ॥ ४० ॥

ललिता नागरि प्रवीन, धारे कर विशद वीन,
गावत सुर मधुर कहति जागहु सुखदाई ।
विगत निशा शशि मलीन, उडगन की ज्योति
छीन तमचुररव करत फिरत मुद मन अधिकाई ।
त्रिविध बहति सुर समीर, गुंजति अलि मत्त भीर,
प्रफुलित कञ्जावलि रहि सुवास छाई ।
कोक शोक रहित मुदित, देखि दिशा गत प्रकाश
शोभित अकाश अमित अरुन की ललाई ।
तुव मुखारविंद के मकरन्द सुछवि छुधित अतिहि
लोचन मम भृंग रहे आस अधिक लाई ।
दीजै दरसन दयाल कीजै प्रतिपाल तिन्हहिं

ह्वै प्रसन्न अति कृपाल हरिये विकलाई ।
सुनत बचन प्रेम मिलित जागे अति रूप कलित
बिहँसि कह्यौ ललिता किन देखहि इत आई ।
झारी लै जमुन नीर ध्वाइ मुख विलोकि
धीर भई परम मुदित रही नयन मन लुभाई ।
अति उमंग आरति सजि विशद लै उतार
महँ वारति तन मन अनन्द लूटति मन भाई ।
बार बार छवि निहारि अवसर सुख को बिचारि
जन भवानी अचल भक्ति माँगी तहँ पाई ॥ ४२ ॥
लखि सखि मृदु श्याम गात, पटतर सब लघु
लखात, मनमथ मन मँह सिहात अति सै सुखदाई ।
नख सिख शोभा अपार, अंग अंग पै बिहार
लहत मोद लखन हार सकति नाहि गाई ।
पद तर अति मृदुल अरुन, अंकुशादि चिन्ह
धरन, मन मतंग स्ववश करन, धरे तहँ छगाई ।
नख सुजोति अंगुलिका चिकन पद पिष्ट
मनहुँ मेचक घन अंग तहाँ रहे बलाक छाई ।

एडिका सुढार नरम गुलफ सुलफ सुखद परम
छवि निधि जनु गडे देखि परत उन्नताई ।
हाटक मनि रचित मञ्जु नूपुर जनु मधुप पुञ्ज
मुखरित झुकि चरन कञ्ज लहि रहे लुभाई ।
सुभग जंघ जानु चारु उरु अति पीन ठार
देखत ही पल पल पर मुद की सरसाई ।
जनु मरकत कदलि दण्ड छोरि पकरि करि
पसार मदन दुराज परम चोप सो उठाई ।
पीत अरुन पिलित रंग कछिनी कट सूक्ष्म सुदृढ
किंकिनि मनि हेम जटित धुनि कर मन भाई ।
जनु सुमेर परत माल पूजत महिमा बिचार
करत गान अति उमंग सुरतिय समुदाई ।
उदर सु छवि को समाज तापर त्रिवली
बिराज नाभिका गम्भीर तहाँ परम शोभ पाई ।
मनहुँ नील सयल उपर अति अनूप सोहत
सर तासु निकट सुखमा रचि सीढिका बनाई ।
उर उदर जलज माल पीत बसन मनि रसाल
श्री नेवास भृगुपद को अंक अति सुहाई ।

रवि के लखि निकट दया सम्पति सुर मण्डल
करि घेरयौ हरि लेत अचल चपला पछिताई ।
उन्नत शुभ पन कंध अति सुढार प्रलम्ब
अंगद कंकन विचित्र शोभा विपुलाई ।
सुर तरु साखा अनूप अति अद्भुत फरनि
फरी झुकी देन सबहिं सकल भाँति की भलाई ।
ललित परम सुखद पानि अंगुलिका नख सुजोति
धारे तिन मुरलि कहत बनत नहिं लुनाई ।
प्रफुलित अरविंद दलन प्रति विलसत हंस मुदित
लख निवास रंप रही कोकिल तँह आई ।
जुत त्रिरेख कंठ चिबुक गाड सहित कल कपोल
अधर रसन अरुन हास दीपति अधिकाई ।
सुखमा जनु कढि त्रिवर्ग मोक्ष सब थल बिलोकि
भक्ति कंज को सालस तारहिं तँह तहराई ।
नासिका सुढार लसत गज मनि अति लोल
सुछवि सुन्दर मुख रदनि पंक्ति परत इमि लखाई।
दाडिम फल रखत कीर, मुक्त सीप भ्रम
मराल ढुकत बारबार ताहि देत सो उडाई ।

कुण्डल अति सुछवि रुचिर श्रवनन ढिग अलक
कुटिल वदन सदन शोभा कवि उपमा ठहराई ।
जनु शशि चूसत अहिश करत अमी सुहृदय
खसि मकर त्रसित थलनि निकसि गहि चहै गिराई ।
अरुन असित सित विशाल दृग अतिशय करि
रसाल वर कटाक्ष को निकेत किमि कहौं निकाई।
रस शृँगार सांत वरि समिटि बसै एक तरि
औसर निज निज निहार प्रगटति प्रभुताई ।
बंक भृकुटि तिलक भाल कुञ्चित अति केश
जाल शीश मुकुट मनि जडाव ज्योति जगमगाई ।
मरकत के धनुष सानि जोरि तिन्हें कनकबान
मारत तम गन मयंक सूर की सहाई ।
जुत प्रनलिका सुपृष्टि जनु मरकत कदलि सुदलि
अपर अंग सुछवि अकथ गिरा लखि लजाई ।
सब विधि शोभा अथाह कहत थकत नाग नाह
लखत जे भवानी लहत लोचन सफलाई ॥ ४३ ॥
वा मुरली घनश्याम की मन मोहनि बाजी ।

जासु शब्द मिसि देइ दमामो चढ्यो मदन मद गाजी।
हम अबला वह प्रबल महा अति ताते सरन गोविन्द करै राजी।
और विचार काम नहिं आवन जो रहै सुर जन लाजी।
अपनो प्रान बचावन के हित देहु कानि कुल त्याजी।
कहाँ उर कोउ बिराजी मेरे तुमहूं सकल समाजी।
उचित होइ तौ सब मिलि करिये वेगि साजि सोइ साजी।
मेरे मन दृढ यह मत ठान्यो और मत जानि अकाजी।
फागुन को भल अवसर पायो मन भायो छल बाजी।
दास भवानी मोहन को मिलि तासु रूप छवि छाजी,
मुदित मन तहहिं बिराजी ॥ ४४ ॥

धावत मनभावन आवत।
अबिर उडावत रंग बरसावति।
दृगनि नचावत भाव बतावत, हँसि हँसि वंशी बजावत।
धूम मचावत मटकावत ललचावत[1]......................
सैन चलावत मिलन जतावत बखस प्रीति लगावत।
करनि गहावत धरनि बचावत मुरि भजि बदन छिपावत
मान छुटावत बिहँसि हँसावत निज छवि मैन लजावत

[1] मूल पुस्तक में इसका आधा भाग नहीं है।

मोहि गोहरावत चाव बढावत मन मानो फगुवा गावत।
दास भवानी मुद सरसावत पावत कण्ठ लगावत ॥ ४५ ॥

आरति कीजै प्रियतम प्रिय की।
जाते अरति मिटै सब जिय की।
अतिशय रूप मनोहर दोऊ।
जिनकी पटतर लहत न कोऊ।
मुदित परस्पर बदन निहारत।
छकित सुछवि लोचन नहिं टारत।
मृदु मुसकाय धरे गल बाहीं।
कछु बतरात हँसति मन माहीं।
ललिता ढिग छवि लखि तृन तोरै।
परम मुदित दृग पलकन मोरै।
अपर पखावज झाँझ बजावै।
लीला चरित मिलित गुन गावै।
कोउ सप्रेम ह्वै नाचन लागै।
अञ्चल ओढि प्रीति पद माँगै।
नन्दलाल वृषभानु दुलारी।
दास भवानी लखि बलिहारी ॥ ४६ ॥

प्रात दोउ राजत सुखमा ऐन।
राधावर ब्रजराज लाडिली मम जग उपमा है न।
जिनके अँग अँग छवि लखि लखि करि लजत अमित रति मैन।
मनभावन सुख कहन न आवत जो पावत दृग चैन।
मुख शशि नैन चकोर परस्पर पेखत पलक परै न।
परम मुदित भुज धरि वर अंसनि कहत मधुर मृदु बैन।
यह शोभा देखत जो कोऊ तिन्हहिं कबहुँ बिसरै न।
दास भवानी जुगुल सुछवि लखि करत सफल निज नैन ४७

मनमोहन के मनमोहन को मन में मत ठान चलीरी।
रूप छबीली गुनगरवीली श्रीवृषभानु ललीरी।
सोरह साजि पहिरि द्वादश वर भ्राजत भाँति भलीरी।
जनु शुभ लता रम्य सुर तरु की फूली और फलीरी।
धरि निज भुजवर अंश परम हित जो संग चतुर अलीरी।
अति उत्साह उमाह मिलन कँह पहुँची कुञ्ज गलीरी।
जहँ घनश्याम माधुरी मूरति मति रसि अवसि पलीरी।
मृदु मुसकाइ नचाइ दृगनि बस कीन्ह्यो छैल छलीरी।
झपटि लपटि दोउ एक दिग राजत मरकत कनक कलीरी।
दास भवानी पथिक चित्त कहँ यह छवि सुखद थलीरी॥४८।

प्रियाजी मनुहारि हमारि मानि हेरि हँसि बोलो ।
नीलाम्बर नीरद टुकटारो चंद वदन निज खोलो ।
मिथ्या मान तुला करि नागरि प्रेम हमारो तौलो ।
है पूरो तजियो अपनो छल काहिको हृदय थथोलो ।
मम जीवन आधीन तिहारे कोप[1] को छोलो ।
हे सुखदानि दया उर आनहु हँसि के वेग कलोलो ।
देख दशा सुनि बचन लाल के ठाठ कोप को डोलो ।
दास भवानी हँसि लपटे दोउ सो सुख अकथ अमोलो ॥४९॥

तुम्हैं कोउ टेरत है सुखदाई ।
मधुरी बैन सरस आरति युत प्रान प्रिया की नाईं ।
जाकी तुम मग तकत सोच बश बैठे मान बनाई ।
सोई सुख सुखी मुखरा वर वारवरि[2] मति सी धाई ।
करत प्रसंग रंग रस भीनी निपट निकट चलि आई ।
आन भावते को सख देखत मुदित मनौ निधि पाई ।
ललित वचन ललिता के सुनकर विहँसे कुँवर कन्हाई ।
कहत भवानी छवि मानी लखि हँसकर कण्ठ लगानी ॥५०॥

---

१ यहां कुछ पाठ छूट गया है ।
२ छंद अशुद्ध और भ्रष्ट है ।

सखीरी व्योम विमान न छायो ।

नील साजि साजि युत सुरप सैन युत भूषण देखन आयो ।

लखि घनश्याम अलौकिक शोभा आनँद उर न समायो ।

गरजनि व्याज प्रशंसति पुनि पुनि अमी सलिल बरसायो ।

चपला मिसि पट करति निछावरि निज समाज पहिरायो ।

धुरवा छल निज करनि अवनि रज ब्रज की शीश लगायो ।

हम सब धन्य सिहात जाहि सुर सो सुखदायक आयो ॥

सखि अब नभ अवनी घन छायो ।

उत चपला घनश्याम प्रिया इत ब्रज जन जीव लोभायो ।

उत गरजत मुरली इत बाजत लागत शब्द सोहायो ।

उत जल वृष्टि इतै रस बतियां अमृत रस बरसायो ।

इन्द्र धनुष इत गरजत सुमन दल तुलसी माल बनायो ।

दास भवानी मुदित मोर मन उमगत छवि लखि पायो ।

पीत बसन युत श्याम विराजत ।

वृन्दा विपिन अलौकिक सब दिन

अम्बुद तडित अवनि पर राजत ।

गुञ्जा सुमन तुलसि दल निर्मित

माल इन्द्र धनु की छवि छाजत ।

मधुर मुरलिका की धुनि जब तब
मृदु गम्भीर मनहुँ घन गाजत।
विहरत प्रकट होत श्रम के कन
पूरित परत बुंद जल भ्राजत।
दास भवानी लखत मोर मन निज
हित ढिग लहि अति सुख साजत॥ ५३॥

राग मलार

प्रिया प्रिय रूप परस्पर माते।
यक टक नयन चकोर चन्द मुख पीवत छवि न अघाते।
घन घुमण्ड आये नभ मण्डल घहरत जल बरसाते।
चपला चमक रही चहुँ दिश ते भीजत कछु न सकाते।
हँसि हँसि बचन कहत दुहुँ दिशि ते प्रेम विवश लपटाते।
पवन चकोर खुलत तन कहुँ कहुँ कबहुँ बसन फहराते।
क्रीडित विविध भाँति निजि निजि रुचि उमँगत मन सुखमाते।
'दास भवानी' लखत केलि सुख सतगुरु संत कृपाते॥५४॥

दोऊ भिजत प्रेम वश ठाठे।
कालिन्दी तट रमत रेत पर प्रिया लाल सुख बाठे।
कर पल्लव निबरावत जलकन पट चुचात रँग गाठे।
पवन झकोर बिबश लपटत हँसि तजत लाज के खाठे।

लखत 'भवानी' रतन मनोरम छवि शृंगार दधि काठे ॥५५॥

राग सारँग

दोऊ मिलि नाचत एकहि संग।
रसिक छबीले लाल लाडिली प्रफुल्लित प्रेम उमंग।
अति गति वात बिवश फहरत पट पीत नील शुभ रंग।
तडित नील घन पर बिहरत जनु जलद मेरु के शृंग।
बजत बीन करताल पखावज मुरली मृदु मुँह चंग।
उघटत छंद प्रबन्ध बिबिध बिधि सुर वशि करत अनंग।
हाव भाव सब नृत्य कला के प्रकटत निज निज अंग।
देख 'भवानी' मुदित परस्पर माँगत भक्ति अनंग ॥ ५६ ॥

भोजन कीजिये सुखदानि।
प्रिया पति मकहत ललित[1] समय शुभ अनुमानि।
भले कहि हँसि चले दम्पति पाकगृह सुखमानि।
ध्वाइ पग बैठाइ सन्मुख दोउ सुखमाखानि।
एक ही सजि थार नागरि धर्यौ जुग बिच आनि।
छहौं रस अरु चारु बिधि के चखत परम सयानि।
ग्रास लै लै रहे ठगि से करनि रूप लोभानि।
पाया दिन दूलह कहति हँसि त्यागिये सकुचानि।
लाडिली दियो स्वकर ग्रासहिं लाल सुख हित जानि।

१ इस राग में दो मात्राएँ कम हैं।

लाल अतिहि उमंग प्रिय मुख देत स्वाद बखानि ।
मुदित जलधर विजन ढोरत कहि सरस मृदु बानि ।
जन भवानी आस जूठनि तहाँ जोरे पानि ॥ ५७ ॥

राग गौरी

भोजन करत प्रिया सँग प्रीतम सुनि सखियाँ उठि धाई जी ।
अति उत्साह उमाही छवि की सब जुरि मिलिकर आई जी ।
देखि परस्पर प्रेम विवश दोउ हर्षित सकल लुगाई जी ।
मोद विनोद बढ्यो सब के उर गावत गारि सुहाई जी ।
सुनहु लाल तुम छैल छबीले छवि राधे बौराई जी ।
करि लीन्हीं वरबस अपनी तुम संग लहकि कर खाई जी ।
पर हम प्रेम हेत इनहीं के आजु खुली चतुराई जी ।
तुम हलधर के ये वृषभानुजा[1] प्रकट कहाई जी ।
विधि संजोग आगे करि राखेहु नामहिं प्रगट सगाई जी ।
मरकत कनक तडित घन के सँग शोभित छवि अधिकाई जी ।
इमि जोडी तुव लाल लाडिली निरखत सब सुखदाई जी ।
चिरजीवहु तुम रसिक शिरोमणि जिन हम सब अपनाई जी ।
सुनि सुनि बचन प्रेम रस पागे श्याम प्रिया मुसुकाई जी ।
हँसि हँसि कहै हमें प्रीतम तुम सम नहिं कोउ जगजाई जी ।
तुम्हरिहिं कृपा लाभ यह हम कहँ करि नहिं सकत बडाई जी ।

---

१ इस छन्द में चार मात्राऐं कम हैं ।

प्रेम प्रशंसा बचन उभय दिशि सुनि सुनि मोद अघाई जी ।
चहत भवानी यह सुख अवसर मों मन बसहि सदाई जी ॥५८॥

राग गौरी

जसुदा घर ज्याये करनी अकथ गुसाई जू ।
या तनया की रति तुम्हहिं जोग सदाई जू ।
करि जतन विविध हम मन ते तुम्हहिं बराई जू ।
पर पुरुष कहावत हमहूँ नारि पराई जू ।
हम सब सों ऊँची राधा नाम धरायो जू ।
जे धर्म सयानी ब्रज में लोग लुगाई जू ।
तुमको राधा वर कहि कहि सकुचाई जू ।
तुम ढिंग वास ते हमरी यहै बडाई जू ।
कछु विलग न मानव उचित गारि हम गाई जू ।
हँसि कहत लाडिली बातें भली सुनाई जू ।
हमको तुम प्रीतम हरत चित्त चतुराई जू ।
दुहुँ दिशि ते प्रमुदित बारबार मुसुकाई जू ।
तहँ दास भवानी जाँचत प्रीति ढिठाई जू ॥ ५८ ॥

भोजन कर अँचवन हित आये ।
ललिता धाइ नीर भरि झारी परम मुदित कर वदन धुवाये ।
खरिका दीन्ह विसाखा हँसि करि रूप निहारि कटाक्ष चलाये ।

विमला विमल अँगौछा लेकर पानि वदन सुख सदन पोछाये।
मृगनयनी वीरी हँसि दीन्हीं चित्रा चित्र सुगन्ध लगाये।
गज गमनी कल हंस-गामिनी सँग लै सिंहासन बैठाये।
चंपक लता इन्दु वदनावर दुहुँ दिशि तोरत चमर सोहाये।
कलकंठा पिकबैना नागरि लै बीना मृदुराग सुनाये।
परम मुदित तेहि अवसर दम्पति सबको देत सकल मन भाये।
'दास भवानी' पाइ प्रसादी कौतुक लखत परम सचुपाये॥६०॥

श्वेत कमल प्रभु प्रिय कर दीन्हों।
अरुन बरन लखि चकि हँसि पूछत
कहहु छबीली यह कह कीन्हों।
कौतुक लखन जोग बड अचरज
लखत श्याम रूपहिं तेहि लीन्हों।
'दास भवानी' देखि हँसे दोउ
लाल आपनो पंकज चीन्हों॥ ६१॥

दुतिया चंद प्रियहि दरसावत।
रसिक लाल भुज ग्रीव मेलि कर उत उठाइ तरजनी बतावत।
पूरन इन्दु वदन के आगे कला तासु की दृष्टि न आवत।
किल कत झूठ कहत मनमोहन किमि मो कँह वरवस बहकावत।

अंचल पट करि प्रगट दिखायो हँसि देखत पुनि ताहि न आवत।
कहत चरित कछु करत लाडिले की मोंहि भ्रम कछु सेन जतावत।
हँसत श्याम कहि सुनहु छबीली बदन रदन तुव ताहि छिपावत।
'दासभवानी' चरित जुगल के समुझि समुझि मनमोद बढावत ६२

मुकुर करनि निज बदन निहारत।
श्याम श्याम श्याम श्यामा लखि परम
अचम्भित पलक न पारत।
दृग बसि रह्यो रूप सोइ प्रगटत
अचरज वश सो तो नाहिं बिचारत।
कहत कौन विधि के ये दरपन
लखत और कछु और उघारत।
अदलि बदलि पुनि पुनि अवलोकत
बोध न जतन अनेक सुधारत।
हँसि हँसि कहत चरित यह कैसो
देखि देखि बहु बिधिहिं सोहारत।
ललिता कहति बिहँसि किन चेतत
दृग बस्यो रूप पलहु न बिसारत।
सुनि सचेत निज निज मुख देख्यो

दास भवानी तेऊ धारत ॥ ६३ ॥

अकथ छवि या नागर नट की।

जो अभूत सुख देखत उपजत कहि न सकत घटकी।
श्रुति सेवत वर नाकवास जे मुक्ता सुधि सटकी।
लखि कपोल द्युति अधर मधुरता तेउ रहत लटकी।
सुमन जूथ गरवरई झूमत उर छवि रस गटकी।
चपला कँटि लम्पटी सुभाव तजि मिसि पियरे पट की।
सुबरन रतन पगनि नहिं छोडत मानत नहिं हटकी।
कहत 'भवानी' लखत लोभानी सोई मत चटकी॥ ६४ ॥

आजु मोंहि छवि बिसरत नाहीं।

वृन्दाविपिन सोहावन सब विधि
सुखद कदम जहँ शीतल छाँहीं।
त्रिविधि बयारि बहत सुखदायक
नाना खग बोलत तेहि ठाहीं।
मृदु मुसुकाइ नचाइ चपल
चख श्यामा श्याम धरे गलवाहीं।
जिनकी देखि अलौकिक शोभा
अमित कोट रति काम लजाहीं।

कोउ करै गान तान ऊँची लै
कोऊ सखि निरतत नाहिं अघाहीं ।
मोद विनोद अवनि नभ लखि लखि
सुनि जय सुर सुमन बरखाहीं ।
कहत 'भवानी' प्रिय प्रीतम छवि निशि
दिन बिलसत मो मन माहीं ॥ ६५ ॥

जमुना पुलित माँहि दोउ बिहरत
परम मुदित कर सों कर जोरे ।
श्रीवृजराज छबीले नागर संग
वृषभानु सुता बय थोरे ।
रतन जटित सिर मुकुट चण्डिका
सूर चन्द सम छवि एक ठोरे ।
श्याम रूप पट पीत लसत अति
गौर गात युत नील पटोरे ।
रति पति रति घन तडित लजत
कहि ये कछु और रँग के पोरे ।
परम रम्य अवनी अति राजत
त्रिविध पवन के चलत झकोरे ।

वारहिं बार प्रशंसत पुलकत
हँसि हँसि देखत नीर हिलोरै।
मोद विवश गावत मधुरे स्वर
भाव बतावत निज निज ओरै।
'दास भवानी' यह छवि कौतुक
निवसति अनु दिन उर पुर मोरै॥ ६६॥

राग सोरठा

प्रिया प्रभु शोभित कछु अलसीली।
करिये शयन रसिक वर सुन्दर हौं सजी सेज रंगीली।
सुनि प्रिय बचन ललित प्रिय सखि मुख हँसि चले गति गरबीली।
आइ पुलकि पौढे पलका पर मोहन संग छबीली।
ललिता पाइ पलोटत रुचि शुचि बतियाँ कहत रसीली।
अति मुद ताहि प्रशंसि कहति अब शयनहु तुम शुभ सीली।
झपत पलक जमुहात बदन लखि सुनि कढि द्वार लजीली।
चिक पट डारि 'भवानि' व्यजन वर डारि हलावत ढीली॥६७॥

ठुमरी

साँवलिया प्यारे काहे बिलमि रहे।
शरद विमल निशि विपिन मनोहर हग जलधार बहे।
हो आई यह कुंज कुटी में लाल तिहारे कहे।

की तुम्हैं भूली सुधि संकेत की की कहुं बीच गहे ।
तुव वियोग जे सहत दुसह दुख ते नहिं परत सहे ।
उर उलहे जे विटप मनोरथ ते सब जात दहे ।
तेहि अवसर तहँ छैल छबीले आये उर उमहे ।
दास 'भवानी' मोहन को लहि पाये सुख जे चहे ॥६९॥

दादरा

सॉवलिया मेरो मन ललचावै ।
डारि ठगौरी रूप सुछवि की नैननि सैन चलावै ॥
घाट बाट जहँ लखत मोहिं कहुँ तान रसीली गावै ।
जो मैं लखत ओर नहिं वाकी मधुरी बेनु बजावै ।
नाना हाव भाव तन के करि मेरी लाज छुडावै ।
सोवत भवन तहूँ नाहिं छोडत सपने दरश दिखावै ।
देखि देखि नित चरित मनोरम मेरे मन वहै भावै ।
दास 'भवानी' चाह यहै अब कब धौं कण्ठ लगावै ।

प्रिया तव आनन सुछबि निकेत ।
छिन छिन मोद बढ़त अवलोकत मेरे मन विवि दृगन समेत ।
अचरज कछु प्रगटत सो पूछत कहिये नागर खोलि संकेत ।
शीश जुलसत यथोचित वय के शशि बदने कच लटकत स्वेत ।

रतन जटित भूषण सब अंगन जे दुति मन हर लेत।
विम्बाधरि इन्द्रीवर लोचन गुंजा बेसरि को कह हेत।
सुनि चकि निरखि श्याम दरशन करि प्यारे कित तुम्हरी चित चेत।
हेतु 'भवानी' निज मुख प्रगटत मुक्ता दरसायौ हँसि हेतु ॥७०॥

प्रिया तुव मुख लखि शशि छवि छीन।
तुलत तुला गोपाल तासु नभ तव रहजौ महिधर लीन्ह।
सोच यही दिन प्रति कुढि कुढि करि घटि घटि किय तन खीन।
शंभु प्रसाद पाइ पुनि पुनि बढि कीन्हें सब अंग पीन।
तउ न लही सरि डाह दरश उर करि नाना विधि दीन।
कहुँ प्रगटत कहुँ दुरत विशालहि दिल दुरि रहत मलीन।
तव मुख सदहिं दिखत निशिवासर छिन छिन ज्योति नवीन।
कहत 'भवानी' इन्दु बदन प्रभु चित चकोर बस कीन्ह ॥७१॥

प्रिया तुव लोचन सुखमा जोर।
लजि तिमि बूडि कंज जल साईं खञ्जन भ्रमत चहुँ ओर।
दीरघ श्याम श्वेत अरुनारे गरल अमी मद भोर।
हरत प्रान पर सकत न घुमवत धर्म शील न कठोर।
जब करुणा कर हेरत मोतन वर कटाक्ष की कोर।
गिरत कहूँ पट लकुटि मुरलिका धीरज रहत न मोर।

मैं निज हिय आसूँ भरि राखे समुझि चित्त के चोर।
दास 'भवानी' देत मनोरथ सकल कहत सो ठौर ॥७२॥

श्याम वदन शुभ शोभित सुखमा शील सनेह सने।
वय वपु वसन विभूषन वैठक वर वानिक विधु वदन वने।
चितवनि चारु चखनि चित चोरनि चोपन चंद चकोर चुने।
छकि छीनिनि छंद छलनि छपायनि छिनिछिनि छलकत छवि न छने
मधुर मंद मुसक्यात मोद मन मोहत मन करि मान मने।
गीधे गान सुनानि गरवीले गूढ़ गिरा गायकनि गिने।
प्रेम परस्पर पुलकत पुनि पुनि परसत पावन प्रीति पने।
भरि उर भवन भाँति भालि भाँतिन भूरि भवानी भाग भने॥७३॥

आज मुरली बजावत वंशीवट तट वीर री।
झुकि झूमत द्रुमलता विविध विधि बरवस बिनहिं समीर री।
धुनि सुनि छेद होत हिय प्रगटत भँवर जमुन के नीर री।
खग अँग ह्वै जहँ तहँ झुकि बैठे परम मुखर पिककीर री।
पशुगन खान पान सब भूले चितवत चकित अधीर री।
हम अबलन की कौन चलावत छकित विरत मनुधीर री।
वह मन मोहनि ध्वनि त्रिभंगी कोमल श्याम शरीर री।
कहत 'भवानी' लखत स्व वासिकर चितवन नावत वीर री ॥७४॥

प्रिया यह तेरी मृदु मुसुक्यानि।
कहत कौनहूँ भाँति बनत नहिं सब सुखमा की खानि।
सम्पुट अधर चलन तिरछी संग गाड कपोल गडानि।
मोद लहत लखि जो मन मेरो सो नहिं सकति बखानि।
हर्ष विवश खुलि जात कबहुँ तव दमक दशन दरसानि।
मुकुलित कंज कोस महँ प्रगटनि सुछवि कुन्द कलिकानि।
हौं मोहन धरि धीर सकत नहिं सुधि बुधि जाति बिकानि।
दास 'भवानी' लाभ जन्म को लखिवो अभिमत दानि॥७५॥

प्रिये तव सुनि मृदु मधुरे बोल।
मोद भरे शुचि सरल रसीले आशय गाहिर अतोल।
अधरनि दुरकि रहे मनि मुक्ता बेसर प्रसति अडोल।
सुवरन भरि राखे निज हृदयनि जे कठोर उर पोल।
लखि जड गति कल कंठ लजानी कटि गई वन कहलोल।
बरषा व्याज चतुर चुप साधी उपवन करै कलोल।
हौं अपनी गति कहि न सकत कछु रह्यो बिकाय बिन मोल।
श्याम विनय करि कहत 'भवानी' सुखदाई ते खोल॥७६॥

प्रिये तुम अतिशय प्रीतम मोहिं।
फनि मनि हीन होति गति मेरी जो छिन लखत न तोहिं।

का जिय जानि चतुर चुप साधी बैठि रही किमि केहि ।
तव सूरत मम हृदय निवासिनि झूँठ साँच किन जोहि ।
समुझे बिन भ्रम बश भलि भामिनि निपट निठुर जनि होहि।
तोहि मोहि अंतर कहु कैसो अपनो ही हिय टोहि ।
जा चितवन मेरयो मन मोल्यो हँसि हेरयो पुनि वोहि ।
कहत 'भवानी' उठि उर लागी प्रेम लीन चित पोहि ॥७७॥

प्यारी किन मनमोहन को मन राखै।
तू नित बसत प्रान प्रीतम उर का समुझै चित माखै ।
निशि दिन करत प्रसंग जासु तूँ करि लाखन अभिलाखै ।
निज पद पंकज अवलोकति है कबहु मूँदि रहै आँखै ।
लघु निज भाग परम सुकुमारी वेगि सुछवि रस चाखै ।
सुनि हित बचन मधुर प्रिय सखि के कोप दियो धरि ताखै।
कहत 'भवानी' हँसि प्रभु भेंटी पूरी सुख विधि लाखै ॥७८॥

दादुर

हमारो हितू रसिया कुंज गली को ।
छैल छबीलो रसिक रसीलो स्वामी वृषभानु लली को ।
रूप मनोहर धज अलबेलो मोहन भाँति भली को ।
बरबस लाज मान हठि छीनत हँसि कै अनुज हली को ।

जाकी चितवनि को सुख जानै मन कोऊ अमली को ।
कहत 'भवानी' मेरो जीवन धन सुर वाकी मुरली को ॥७६॥

सखि मनमोहन बेनु बजाई ।
जब तें श्रवनि परी मेरे धुनि तब ते कछु न सुहाई ।
सुधि बुधि सब मोहित अब मेरो मन गयो उतहिं लुभाई ।
दरस परस वाही के सजनी छिन छिन रुचि अधिकाई ।
चलु लै सँग मोहिं अब प्यारी हे वह वर सुखदाई ।
कहि सब गाथ दशा मेरी की बेगिहिं देइ मिलाई ।
तुव सहाइ मेरी बसि बनिहै करि लैहौं मन भाई ।
पाइ प्रानपति कहत 'भवानी' रहिहौं पग लपटाई ॥ ८० ॥

ठुमरी

छबीली छवि मो मन आनि गडी ।
श्याम वपुष सुकुमार मुदित मुख अखियाँ सुखद बडी ।
शीश मुकुट श्रवनन बिच कुंडल गल सोहै जलज लडी ।
ठौर ठौर पर जनु सुखमा बहु रूप बनाइ अडी ।
पीत बसन कटि लाल काछिनी कोर जडाउ जडी ।
चपल अचल अरुन घन के ढिंग नवग्रह पंक्ति खडी ।
चरण कमल पर नूपुर षट पद श्रेणी मद उमडी ।

'दास भवानी' यह वर झाँकी भूलै न एक घडी ॥ ८१ ॥

अली री हँसि हेरत मोहिं मुरारी।

ब्रज जन जीवन लाल लाडिली अंग अंग छबि भारी।

जाको रूप सहज लखि मोहत सचराचर नर नारी।

सो अनुकूल मोहिं अति चाहत हौ गुनि दोष बिचारी।

सिख कुल कानि उठाइ राखु अब तूँ यहि भेद अनारी।

जा मन लागत सोइ पै जानत चोट लगन की कारी।

माधुरी मूरति वा साँवल की मैं निज उर बिच धारी।

कहत 'भवानी' मगन रहत हौं बारहिं बार निहारी ॥८२॥

दादुर

सखी वृज छैला चलावै भृकुटिया।

यह ब्रजराज रसिक अलबेलो नैनों की सैनों मयन छबि लुटिया।

श्याम गात सोहै पीत पिछौरी नीरद नील तडित मनो जुटिया।

बंसी बजावै मधुर सुर गावै मोहि मग पावै चलावै ककुटिया।

देखत कानि निगम गुरुजन की अति बरजोर गड गई छुटिया।

छकित 'भवानी' सुछवि पर जेहि मोही व्रज नवल बधुटिया ८३

अरी प्यारी बिहरत कुंज गली।

श्याम सलौनों रूप उजागर सँग वृषभानु लली।

मोर पखन को मुकुट शीश पर गूंथित कुसुम कली ।
नैन विशाल भृकुटि अति बाँकी मुख सोहै मुरली ।
कुंडल श्रवन छबीली अलकैं गल मुक्ता अवली ।
कटि किंकिन पग नूपुर सुंदर बाजत भाँति भली ।
कहत 'भवानी' देखत या छबि मो मति भई अचली ॥८४॥

सखि ब्रज जीवन यह घन श्याम है।
देखत बात कहति नहिं कैसहु अतिशय रूप ललाम है ।
जाके अंग अंग अवलोकत लगत सुछबि गत काम है ।
कीन्हीं स्ववश मन्द हँसि कै जिन बाल युवा ब्रज वाम है।
अग जग प्रेम मगन एकै रस कहि सुनि मोहन नाम है ।
लीला अमित भाँति नित प्रति करि बिहरत कदम अराम है ।
जिन देख्यो तेई पै जानत सब दिन सब सुखदाम है ।
कहत 'भवानी' यह झाँकी वर चित पथिकहि विश्राम है॥८५॥

अलि मनमोहन सब सुख खानि है ।
छबि आगर वृषभानु लाडिली जाके हाथ बिकानि है ।
जाकी कोर कृपा अवलोकति सब की अभिमति दानि है।
मंत्र मोहिनी जो जग सुनियत सो ताकी मुसुकानि है ।
वाके अंग अंग पर शोभा तनु धरि आनि लुभानि है ।

सहस शारदा शेष कोटि सत सों नहिं सकत बखानि है ।
लीला चरित मनोहर नित प्रति अज शिव लिखत भुलानि है।
कहत 'भवानी' यह रस सानी सोई सुमति सयानि है ॥८६॥

नवल जुगुल परम रसिक नचत मोद गाते ।
छबि अगरे गुननि भरे दुति रति पति निदरे
भूषण पट रुचिर धरे लखत अति सोहाते ।
पग फहरनि पट झुकि झलकनि मोर मुकुट
लचकनि कटि ग्रीव सीव अकथनि सुषमाते ।
श्रम वश जल प्रकटनि बदननि सुख सदननि
जनु मरकत अरु कनक जडित पद कंकनि गाते ।
बजत पगनि नूपुर कटि किंकिन कर कङ्कन
बिच बिच रव मुरलि छकित अधर रस सुधाते ।
तरु मराल हेम वेलि मधुकर जनु वास करत
मुखरित कलकण्ठ तिन्हें सरहति ममताते ।
ओरति कर कर कमलन चोरति छवि बिविधि
बदनानि वोरति मन मुदमदनानि परस्पर प्रभाते ।
थेई थेई करि भरि उमंग भरत स्वरन एक संग
करत तान मय तरंग ताल राग जाते ।

नभ सुर दुन्दुभि बजाइ नाचत जयति जयति गाइ
निरखि हरखि बरखि सुमन मोद नहिं अघाते ।
कहत रहस को बिलास मुदित मन 'भवानीदास'
चहत प्रेम चित प्रकाश संत गुरु कृपा ते ॥ ८७ ॥

छबीली राधे निरतति प्रेम भरी ।
मनमोहनि मृदु मुरली बजावत निरखति पलनि भरी ।
उमँगि उमँगि गावति दरसावति भावति घरीय घरी ।
एक एक अँग की छबि लखि लखि प्रभु मति जात हरी ।
तीखी तकनि चारु वंशी करि डोरी हँसनि खरी ।
मीन लाल मन उदधि धारते हठि लीन्ह्यों पकरी ।
कहुँ छीनति पट माल मुरलिका कहुँ फोरत अँगुरी ।
गुलचा देइ चपल मुख फेरति गहनि नवाइ टरी ।
अमित भाँति सुख देत लाडिलेहि रस गुन अति अगरी ।
'दासभवानी' ता स्वामिनि की मूरति हृदय धरी ॥ ८८ ॥

सोरठा

रसीलो प्यारो नाचि नचि प्रियहिं रिझावै ।
थिरकि थिरकि दृग जोरि मोरि अँग अगनित भाव दिखावै ।
हरष विवश छवि निरखि प्रिया मुख तान सुरस सुर गावै ।

मुरली अधर रंध्र अँगुलि चख मुद भरि मधुर बजावै ।
मोद उमंग कहत थेइ थेई निपट निकट चलि आवै ।
गहि कर चिबुक प्रान प्यारी की कहि कछु मन्द हँसावै ।
बलिहारी कहि सरहति प्यारी दूनों चाव बढावै ।
'दासभवानी' अकथ सकल विधि सुख जानै जोइ पावै ॥८९॥

अहो प्यारो श्याम सुंदर छवि आगरो
संग श्यामा रूप निधान सो हो ।
सुखद वारि जमुना वहै
तामें कर मुदित स्नान हो ।
गात परस्पर मज्जहिं दोऊ प्रेम उरनि सरसान हो ।
हँसि हँसि सखिन बिलोकहिं तिन्हें देत सुछबि मुद दान हो ।
चहूँ दिशि ललना नागरी तन वय की नवल उठान हो ।
मानो उडगन को मंडल बन्यौ ताके बीच लसत भान हो ।
हरषित बार उछाल ही लखि छवि हँसि करत बखान हो ।
कहत 'भवानी' भाग्य ते कोऊ पावत यह वर ध्यान हो॥९०॥

विपिन विहार करति मिलि दम्पति
श्यामा श्याम मुदित छवि भारी ।
द्रुम शाखा दल लता सुमन फल

शोभा निरखति बारहिं बारी ।
उच्च सरल चिक्वन घन सौरभ
अतिहि मधुर कहि होत सुखारी ।
बोलत शुक पिक मोर अपर खग
गुञ्जत मधुकर सुमन बिहारी ।
सुनि सुनि बोल परम प्रिय भावत
कहत लेत मनु पथिक हँकारी ।
कहुँ जमुना कहुँ अपर विमल सुर
पियत उछालत निरखत बारी ।
शीतल स्वादु सराहि महामुद
कमल सुछवि अति लेत उपारी ।
सुमन नवल दल तोरि लता
द्रुम भूषन माल सचोप सँवारी ।
प्यारी को पहिरावत प्यारो
प्यारे को मुद भरि प्रिय प्यारी ।
संकुल तृन कहुँ तृन विरहित महि
घन बिटपन की परि रही कारी ।
रवि भा तरु दल विच लखि पुलकत

कहि मरकत मँह पवि उजियारी।
और विपुल सँग सखि शोभित
जनु वय रूप साँच यक ढारी।
कौतुक करि करि सुछवि दिखावत
निज निज रुचि सब गोप कुमारी।
श्रमहारक सुखदायक डोलति
शीतल मन्द सुगन्ध बयारी।
रसिक शिरोमणि बिलसति छाके
'दासभवानी' नित परवारी॥ ६१॥

साँवलिया छबि लखत बनै।

जो प्रति रोम होइ मम रसना तउ नहिं सुमरय ताहि भनै।
एक एक अँग ऊपर जाके सुखमा अनुपम कौन गनै।
जो सुख लहत बिलोकत सजनी सो जानत मन माँहि मनै।
वह अनियारे दृग की चितवन लाज कानि की मूल खनै।
श्याम गात फबि पीत बसन की निंदति कोटिन ताडित घनै।
मृदु मुसकानि छबीले मुख की सचराचर वश किय अपने।
कहत 'भवानी' सोई सुख जानै जाकी मति वहि रूप सनै॥९२॥

लखि सखि मोहन रहस रचै।

करि मंडल ब्रज नवल बधुन को आपुहि तिनके बीच बिचै।
मुरली बजाइ नचावत प्रमदन कबहूँ प्रमुदित आपु नचै।
इक कर देत उठाइ गगन दिशि दूजो धरि कटि लचय लचै।
थिरकि चहूँ दिशि मुख दरसावत गावत थेइ थेइ मचै।
काहू के मुख को श्रम पोंछति अछति आलिंगन अकथ खचै।
अति बडभाग रसिक जे या छवि कहत 'भवानी' रेख खचै ९३

नचत लाडिली लाल बनी।

लाल लटपटी पाग सीस धरि तेहि खोसे चोटी अपनी।
जनु सुमेर के अंग अरुन घन तापर राजत रुचिर फनी।
बागी उठन घेर को शोभित पट को लट को सुछवि धनी।
नील रंग की काँधा सोती चुनि धारी झीनी वटनी।
चपल बरन कर थिरकि चहूँ दिशि दोउ कर मसकत प्रेम सनी।
केहु एक कर दामन गहि उर धरि एक कर मूठी तरल तनी।
नयन नचावति कटि लचकावति वयन कुहकि वस करत धनी।
अँचल पट कबहूँ मुख ढाँपति मुरि मुरि हेरत बिधुबदनी।
मुददायक अघहारक स्वामिनि ता छवि प्रगट 'भवानि' भनी ९४

चलु सखि चलिये री मुरलिया बाजन लागी।
रहस समाज चेतावन हित गन वह बड भागी।
श्याम सुन्दर नटवर प्रीतम की छवि में पगी।
गुरुजन लाज कानि निगमन की मैं सब त्यागी।
कहत 'भवानी' रुचि निज मन की अनुरागी ॥ ९५ ॥

ए दोउ झूलत मोद भरे।
राधाकृष्ण वसन कुसुमाने जनु अनुराग धरे।
वृन्दा विपिन मनोरम शोभित सुखद कदम्ब तरे।
प्रेम विवश महि हरित लता द्रुम कुसुमित और फरे।
घन घमंड देखन हित आये हरषित अति घहरे।
मोर शोर कर तिन्हहिं सुनावत इन मन मदन हरे।
झोकनि झलि उमंग उपराजत दोउ गल बाँह धरे।
कहत 'भवानी' यह सुख शोभा सबही मोहिं परे ॥९६॥

अरी श्याम सुन्दर छैल बरबस दृग जोरै।
कौतुक करि विविध भाँति हँसि हँसि मुख मोरै।
मेरे मन सरल ताहि मदन सरित बोरै।
तानि भृकुटि धनुष जोरि सर कटाक्ष कोरै।
लाज कानि कवच सुदृढ जानि ताकि तोरै।

अपरन संग हँसि बिलसत सन्मुख करि भोरै ।
करि बचाव तिनहिं दृष्टि इष्ट मोरी ओरै ।
मधुरे कहि बचन अमी श्रवन हृदय घोरै ।
छकित छवि 'भवानी' तासु जो हित चोरै ॥ ९७ ॥

जाउ लाडिली लिवाइ आजु इतै आवो ।
छवि अगरी गुननि भरी जहाँ तहाँ धावो ।
मम सन्देश विकल दशा वेगि तेहि सुनावौ ।
तुव बिनु जल-हीन मीन मनि गवावो ।
चातक ज्यों रटत तोहि तपनि मम बुझावौ ।
और करत जतन बिविध कत चित भरमावो ।
जौन कौन भाँति प्रान वल्लभा दिखावो ।
संगहि सुकुमार छिपी ललिता दरसावो ।
देकि हित 'भवानी' श्याम परम मोद पावो ॥९८॥

प्रगटहु किन चित चोर हमारे ।
निशि में विपिन भ्रमत हम अबला कहहु निठुरता काह विचारे ।
तुव सनेह हम बाँधी सिगरी लोक वेद के डर सब डारे ।
छिन पल सुख न लहत सुनु प्रीतम बिनु देखे वर रूप तिहारे ।
हास तुला करि जो तुम तौलत प्रीतम प्रीति प्रतीतिहि प्यारे ।

लखिये दशा समुझि लीजै पिय झूँठ साँच हित जो हम धारे ।
ताते वेगि मिलहु सुखदायक छमि अनुचित हित प्रान हमारे ।
परम कृपाल गहर कीन्हें फिर पछितैहौ ब्रजजन रखवारे ।
आरति गिरा सुनत कोमल चित तुरतहिं तहँ दरसे छबि भारे ।
देखि 'भवानी' जो सुख पायो सो न सकत कहि बडि मतवारे ९९

जगत क्यों न लाडिली जगावत हौ कितको ।
खोलु नयन बोलु बयन हेहि मोद हित को ।
अङ्ग मरोर बदन मोरि होति सोहै जितको ।
मेरो मन थित न लहत फिरत तितै तितको ।
कसमसात अलसि गात गोवत जिमि चितको ।
मुद उमहत दुखित महत यह गति मम चितको ।
लिय उठाइ कंठ लाइ बरवस करि थित को ।
प्रिया खोलि दृग 'भवानी' दियौ सु अमित को ॥१००॥

आलस वश बदन श्याम लखत प्रिया हँसि कै ।
लरखरात बचन रही नींद दृगन हँसि कै ।
अँगडि कै जमुहात चहत परन कोउ मिसि कै ।
हाव भाव प्रगटि गहति अंसनि भुज गसि कै ।
कहत मधुर वयन वसीकरन कर परसि कै ।

प्रेम के उमंग चपल जाति हिये लसि कै ।
जन 'भवानी' स्वाद सदा जानति यह रसि कै ॥१०१॥

कुंजन छिपि रहे लाल प्रिया जब न देखै ।
इत उत सचकित निहारि भयौ दुख विसेखै ।
कहाँ कहाँ कहति रुदति पलक कलप लेखै ।
हे कृपाल हौं बिहाल हाल क्यों न पेखै ।
पूछति सब संग सखिन लगीना निमेखै ।
कित गवनो मन रवनो तजि मोहि बिन देखै ।
ललिता दरसाइ दयो वह नटवर वेखै ।
लखि 'भवानी' श्याम लह्यो परम मुद अलेखै ॥१०२॥

कित गवनी वृषभानु दुलारी ।
मम जीवन धन प्रान-वल्लभा परम छबीली अति सुकुमारी ।
तव बिन छिन पल इमि गति मेरी फनि मनि हीन मीन बिनु बारी ।
अति चातुर समुझति मम मनकी देखि विकलता मिलहु सँवारी ।
का चित आनि दुरी सुखदाई परखत का कछु प्रीत हमारी ।
मेरो मोद तोहि विनए सो चंद रहित जिमि निशि अँधियारी ।
ऐसो हास काम को नाहीं सहस श्रवन है सुनु मनु हारी ।
मम गति होत चहत कछु औरे गहरु करत जो तुम हठि धारी ।

सुनत बचन व्याकुल प्रीतम के तुरत प्रगट लपटी सुखकारी ।
कहत 'भवानी' स्याम मुदिति इमि रङ्कहि लाभ यथा निधि भारी ।

दोउ मिलि कियो चाहत सयन ।
एक ही परियंक राजत अरुनता बसि नयन ।
अंगडि तन जमुहात पुनि पुनि कहत रुकि रुकि बयन ।
देखि रुख हँसि कहत ललिता जाम जुग गई रयन ।
लखि 'भवानी' सोभ सो दृढ राखी उर के अयन ॥१०४॥

ललिता ललित बतियाँ करत ।
जुगुल नवल किशोर पैठि मुदित हूँ की भरत ।
कहि बिबिध इतिहास कौतुक चतुर मन कहँ हरति ।
लखि 'भवानी' छबि अनूपम दृगनि भरि भरि धरति ॥१०५॥

दम्पति लखे जब अलसाति ।
कहति ललिता शयन करिये रही थोरी राति ।
लखत छवि अनुराग सानी यदपि नाहिं अघाति ।
तुम्हहिं होत सँकोच ताते होंहुँ पोढ न जाति ।
प्रात ही मुख कमल प्रफुलित लखब छवि अधिकाति ।
पटनि ढाँपे गात निज लखि काम रति सकुचाति ।
छवि 'भवानी' राखि दृग बिच मोद न उर समात ॥१०६॥

स्याम बाँको री मो चित चोरै।
देखत मोंहि सरस द्दग जोरै हँसि हँसि कै मुख मोरै।
रूप अनूप ठगौरी डारै लाज कानि कुल टोरै।
कहत 'भवानी' छैल छबीलो परमानन्द में बोरै ॥१०७॥

प्यारी बंशी ओ प्यारी दगी।
अधर सुधारस छकि उनमादी बोली प्रेम पगी।
उपज लगामे तान लसा करि मो मति जान खगी।
बरबस अपने बस करि लीन्हीं अब नाहिं सकत भगी।
चारी बोल देत अब नाहीं मेरी आस लगी।
कहत 'भवानी' सीख दीजिये तेरी नाथ लगी ॥३०८॥

मेरो चित बरबस श्याम चुरावै।
तुहि जो मान सयान पने कर तौ करि जतन बचावै।
नयन कटाच्छन करत सेंध उर भवन माँहि धँसि आवै।
डारि मसान मन्द बिहँसन की सुधि बुधि सकल सुवावै।
लाज कानि के बचन बिभूषन लेत न गहरु लगावै।
ज्ञान निधान खोजि करि खोदति कैसहु बचन न पावै।
गहि जो जात दैव वश केहू मोहन बचन सुनावै।
लखत 'भवानी' रूप उजागर तन मन मोद बढावै ॥१०९॥

वाको री नट अलबेलो।
बंसी शब्द व्याज मन मोहन कछु जादू मो पर मेलो।
बिनु रजु बाँस चढ्यौ चित ऊपर परम कौतुकी आप अकेलो।
सदाहिं निवासत है गुनमाती अमित कलारी करि खेलो।
छिन पल चरित अचम्भित देखत हौं सब लोक लाज डर पेलो।
विविध भाँति रिझायौ मन मेरो करि लीन्हों री निज चेलो।
कहत 'भवानी' करत सोई अब तुम अपनो उपदेश सकेलो।

ब्रज रसिक लखत आगम वसंन्त।
संग कीरति तनया रूपवन्त।
सजि पीत बसन सब तन सुधारि,
बैठे गुलाल रंग अबिर डारि,
चहुँ दिशि बन ठनि नव ब्रज की नारि,
लखति छबि तन को बार बार।
कोउ प्रीति सुमन सम अब मौर,
जब बालि सुछबि लखि एक ठौर,
कहि सगुन राखती आगे दौर,
चिरजियहु सुखद कहती बहोर।
जो गान कला में अति प्रवीन,

लै डफ मृदंग मुँह चंग बीन,
करि ताल सुरनि की राग लीन,
बढि उपज तान गावै प्रेम बीन।
कोउ करत नृत्य बाढी उमंग,
करि हाव भाव दरसाइ अँग,
हँसि तासु अंग पर छिरकि रंग,
मेलत गुलाल मुद की तरंग,
कछु पाचु कहत प्रभु जो प्रसन्य,
दीजै निज पद की रति अनन्य,
सब सभा सराहति धन्य धन्य,
बड भाग 'भवानी' लावन्य ॥ १११ ॥
राधा रानी ब्रजराज आज,
खेलत बसंत करि समर ब्याज।
ललितादिक चहुँ दिशि अमित वीर,
जे केलि कलान अचला धीर,
केसरि रँग साजे सकल चीर,
उत्साह चित लखि विपुल भीर।
मुद खेल मनोरथ हय सवार,

गज गमन लसत पदचर विहार,
धुज मुकुट चन्द्रिका छवि अपार,
सेनापति जुग श्रृंगार मार ।
बाँकी भृकुटी सोहै कमान ।
दृग तरकस तामें सयन बान,
पिचकारि करन भरी तुपक जान,
ओली गुलाल कसे तोसदान,
भूषन खन कनि बाजे निशान ।
ललकार करख भाषक प्रमान,
चले पिचक कटा छुटि चोटवान,
पुनि झपटे दोउ दल करत आन,
भुज असिनि कसी तजि बसन म्यान
परती ग्रीवानि जे जे प्रधान,
सन्मुख लै ताकर करि बखान,
येहि बिधि मच्यो अति घमसान ।
कटि परे भूमि तल सुमन जाल,
प्रगट्यो शोणित मेल्यो गुलाल,
बहि चल्यो रंग के रूप लाल,

ठाढे चुचात सब जुवा बाल,
जो केलि चपल चित चलै पराइ,
कादर गनि जुरि मिलि धरहि धाइ,
कहि बचन मन्द तारी बजाइ,
छोडत नाना हाहा कराइ।
सम हारि जीति रही उभय ओर,
मिलि कहत चमहुं[1]
अति मुदित नवल दम्पती किशोर
तहँ चहत 'भवानी' कृपा कोर॥ ११२॥
बिलसत बसंत मुद ब्रज को भूप।
लै राधा रानी छबि अनूप।
व्रज ललना सोहत आस पास,
कोउ नृत्य गान कोउ करत हास,
रंग चलित अबिर छायो अकाश,
सब के मन अतिशय करि हुलास।
धोवै दै लालन लै गुलाल,
भुज मेलि ग्रीव प्रिय के उताल,
लखि मगन भई जब ब्रज की बाल।

---

१ मूल पुस्तक में कुछ भाग छूट गया है।

करि घात अविर प्रिय मूठ माहिं,
मुख मल्यो चहति प्रभु गहि के बाहिं,
इत उत मुख फेरत करत नाहिं,
झकझोर होत हँसि हँसि बताहि ।
चलै जोर न प्रिय थकि उपाइ,
धाई ललना कीन्हीं सहाइ,
प्रभु करते प्रिय कर दिय छुडाइ,
तहँ गहे परम रुचि सो दृढाइ,
कह्वो अब करु जो सजनी सोहाय।
हँसि मल्यो लाल मुख अबिर लाइ,
अंजन दृग मुख कहुँ कहुँ लगाइ,
दीन्हीं बेंदी सो अति सोहाइ ।
लै पाग मुकुट पहिराइ चीर,
कह्यो श्याम सखी अति लसत वीर,
हँसि हँसि लखती तनया अभीर,
कछु करि न सकत लजि रहे धीर ।
ललिता कह्यौ सुनिये ब्रज की बाल,
करिये हिलि मिलि कछु और ख्याल,

राधे को साजि करिये गुपाल,
यह कौतुक लखि हूँ तौ निहाल ।
यह मत सुनि सबको बढ्यौ चाउ,
प्यारी करि प्यारे के बनाउ,
लखि रूप छकी गनि सत्य भाउ,
कहती प्यारे नचि जिय छुडाउ ।
स्यामहु मिलि सब बनि तान झौर,
हँसि कहत चपल यह नँद किशोर,
सखि गहि पायो भल चित को चोर,
अब न छुटन पावै मतो मोर ।
प्यारी कहै सखी तुम्है भयो काह,
घेरयो मो कहँ तजि ब्रज को नाह
कोऊ सुनै न कहि छल छुटन चाह,
सुख कहै भवानी किमि अथाह ॥ ११३ ॥

आजु होरी खेलत प्यारी ।
परम मुदित संग राधा रानि लखि
सखियाँ रही चहुँ ओरी पगि पागि।
मुठी गुलाल की इत उत फेंकत

सकल करी मति भोरी ठगि ठगि ।
काहू सो हँसत मलत मुख काहू के
अबिर छलनि कहि होरी भगि भगि ।
रंग चलाइ गाइ कछु जासों मदन
उठत चित चोरी जगि जगि ।
सवनि भुलाइ श्रवन प्यारी के
बतियाँ कहत रस बोरी लगि लगि ।
लखत समाधि शम्भु मुनिवर की
जाति तहाँ वर जोरी डगि डगि ।
चहत 'भवानी' करों में गुदरिया
निज तन यहि सुख डोरी तगि तगि ॥११४॥

मोहन प्यारी री रसिया घूमि घूमि नित इत आवै ।
आइ हितै चित चोरै मोरै नयन की सयन चलावै ।
प्रेम पगो छवि वारो मोकों मोहित भाव देखावै ।
कहत 'भवानी' शोभा वाकी मेरो मन ललचावै ॥११५॥

बिन देखै मनमोहन के नहिं मोसन जात रह्योरी ।
जाके रूप सिन्धु को सकै नहिं वानी सुमति थह्योरी ।
इत तन लाज जँजीरन बाँध्यो उत मन प्रेम गह्योरी ।

दोउ वर जोरि विपुल दिन बीते झगरयौ नाहिं निबह्योरी।
हौं परि यहि झकझोर आजु लौं दुख अति दुसह सह्योरी।
बडि सुखदानि जानि तोहिं सजनी मैं निज भेद कह्योरी।
मुहि अब बूझि परयौ मति ऐहू करिहौ चित्त चह्योरी।
आलिंगन घृत तेल 'भवानी' तजि कुल कानि मह्योरी॥११६॥

मदन मोहन वपुष छवि छकि रही।
बसन भूषन विविध रूप करि उनमदी तजत
नहिं छनहुँ निशि दिवस तँह जाकि रही।
चन्द अरविन्द असित कदम्ब मरकत सुतरु
बनत पट तरत नहिं सुकवि मति चकि रही।
किधौं शृंगार कै मार कै अपर कछु बोध
नहिं दृष्टि शुचि समुझि की तकि रही।
सुनी नहिं लखी विधि विरचिता में कहुँ
लखत बरबस हरत चेत बुधि थकि रही।
दसन की दमक मिसि हसत उघरी परत
कछुक जो छटा उर भवन में ठकि रही।
हौं कहौं कौन बिधि अनुभवत सुख जो हिय
लखत जेहि मुखर बडि गिरा अकि बकि रही।

कहि 'भवानी' सुलभ भाग ते लेत किन दृग
करिनि मुद्लता फूलि फलि पकि रही ॥११७॥

अली हौं तो मोहन बदन लुभानी ।
जो सुख लहत महत मन मेरो कहत न बनत सयानी ।
झकि थहरनि सिरमोर मोर पत्रन की नहिं कछु जात बखानी ।
नीरद असित वपुष अवलोकत कारन रति अधिकानी ।
अलकैं तरल अमित छवि छलकैं रस शृंगार की सानी ।
इन्दु अमीकर पान अहिप जुग करै कलोल मुदमानी ।
भृकुटी बंक तासु पर कुंकुम तिलक लसत सुखदानी ।
जनु मरकत धनु मदन अहेरी धरे कनक सर तानी ।
मृदु मुसुक्यानि अरुन अधरन की लखि जहँ दुरमति बानी ।
काढि अनुराग सदन ते मोहन किये स्ववश सब प्रानी ।
नासा श्रवन कपोल चिबुक शुभ मंडित छबि सरसानी ।
कहुँ बिलसत कहुँ झुकि सुख चाहत मुक्ता रुचि न अघानी ।
नयन अयन विरहित विधि करतब भरे कछू अनजानी ।
कहत 'भवानी' लखत जासु के होत त्रिताप जुडानी ॥११८॥

छैल छबीलो रँगीलो साँवलिया रोम रोम छबि फबि वारो ।
छन छन शोभ अलौकिक दीसै ज्यों ज्यों रूप निहारो ।

वह मृदु हास विलोकनि तीखी को सुख जानन हारो।
सुधि बुधि कछु न सम्हारै वारै होत महा मतवारो।
शोभा सकल सिमिटि कै ग्रनियौ कछु बिधि करतब न्यारो।
कहत 'भवानी' श्याम सलौनो मैंने कियो दृग तारो ॥११९॥

घहरि रही सुरसरति मुरलिका श्याम की।
राग के गिर प्रगटि उपजि उमड़ी तरलतान की।
बीच आवर्तनी ग्राम की॥
सात इक्वीस के जल चरन,
संकुलित करनि वही रोमाँच आराम की॥
लाज कुल कानि के कूल को ढाहि
कर तरु धीर निर्मूल करि मोहनी नाम की॥
परम आनंद के उदधि को रुष किये,
चलति श्रुति मार्ग उद्दीपनी काम की॥
मन 'भवानी' मगन तासु में अति मुदित,
अकथ सब भाति यह गाथ विस्राम की॥ १२०॥
बजति सखि मुरलिका स्याम की॥
उनमदी अधर अरविन्द मकरंद कँह, पान-
करि करति गुंजार जनु मोद सों षटपदी।

उठति पुनि पुनि गहति तजति नहिं,
ठौर वह रसिक अति किधौं किंजल्क बैनन फंदी ॥
सुनि भवानी परम मधुर धुनि लखि,
दसा लहत आनंद जो कहत में बेहदी ॥ १२१ ॥

प्रमुदित उभय अहेर अहेरी।

वृन्दा बिपिन परम सुख दायक सीतल गहवर सोम घनेरी ॥
स्यामा स्याम कटाक्ष सिलीमुख मोचत चोट देत मुठभेरी ॥
गिरत उठत पुनि हँसत परसपर अद्भुतरूप सजीवनि हेरी ॥
भगि न सकत कोऊ बरवस बीधे बाबरि प्रेम चहूँ दिसि घेरी ॥
दास 'भवानी' देखत कौतुक लहत मोद की अघट निहेरी १२२॥

प्रभुवय अमथ सिंधु बिलोकु ॥
रतन चौदह भरे प्रगटत अमित हारक शोकु ॥
श्री सकल अँग बिधु वदन धनु भ्रकुटि उभय रसालु ॥
विष अमीमद धरे इक ढिंग असितसितलाल[1] ॥
बचन गदहर विपुल रदमणि काम धुक मुसकानि ॥
कंबु कंठ प्रलंब भुज जुग कल्पतरु की बानि ॥
जंघ रंभा गमन गज चल हाव-भाव तुरंग ॥

---

१ इस छंद में दो मात्राएं छूट गई हैं।

मन भवानी लखत शोभा बढ़त मोद उमंग ॥ १२३ ॥

वोहित लाडिली को रूप ॥

तप्त कंचन प्रभा पटतर कहत अकथ अनूप ॥
चातुरी मुदिता दुहूँ दिसि के बने वर बारि ॥
अंग की ठवनि विविध सुखमा भरी वस्तु अपार ॥
सील को मकतूल बाँध्यौ हाव भाव तनाव ॥
छवि छटा को चाँद वान सुबात चित को चाव ॥
प्रेम करि पा गहे हठ करि कर्नधार श्रृँगार ॥
लाज कुल की कानि लंगर धरे उठाइ किनार ॥
चढ़्यो चित बृजराज तामें करत मुदित बिहार ॥
लहि 'भवानी' लखत जाको भव महोदधि पार ॥१२४॥

लखि सखि सुछवि नंद किशोर ॥
चौदहौ विद्यानिपुन अति अवासि चित को चोर ॥
जानिवे जाकी सुविद्या ब्रह्म परगट आप ॥
लखत निज सम कर रसायनि यह विपुल परताप ॥
सहज बचननि में प्रगट सब काव्यता की रीति ॥
मुयौ मनसिज हँसि जियावत रोग मानस जीति ॥
सदहि सबके मन कि जानत ज्योतषी इहि बानि ॥

व्याकरन षट बोध सूचित पद अखंडित दानि ॥
भृकुटि धुनषनि सर कटाक्षनि चराचर बसकीन ॥
मुरलिका सुर छह छतीसौ गाइ चित बित लीन ॥
अहर-निस मन के तुरंगनि पर रहत असवार ॥
प्रेम उदधि अगाध तामें करत नित्य बिहार ॥
वेद जाके गुननि गावत सहज तिनको जानि ॥
कोक सो वृज जुवति सबको सुखद-प्रीतमपान ॥
नाट्य में अति प्रखर प्रगटत दुरत वेष बनाय ॥
चातुरी नख सिख लौं जाके रही अंग समाय ॥
रूप गुन लखि मदन मोहन हौं छकी सब भाँति ॥
अकथ सुख सोभा 'भवानी' हृदय में अधिकाति ॥१२५॥

सुनु प्रिय सजनि रजनि अब बीतति ॥
तन तनतोर मृदुल में जानति यह कठोरता मान नरीखति ॥
सकल दसाहौं स्याम सुन्दर की कही आज तू नहिं परतीतति ॥
सहन जोग वियोग तोरत यहौ समुझि मनमें नहिं भीतति ॥
तू सुखदानि मोहि अति प्रीतम यह विचार मे बरबस नीतति ॥
जो चातुरि तौ करु बिचारि यह प्रेम कटाक्षनि नहिं किन जीतति
चलु चलु वेगि विलंब न करु अब काह विचार चलन में थीतति ॥

समुझ 'भवानी' धाय मिली हरि परमानंद मगन है गीतति १२६।

दोऊ छवि आगर करत बियारी ॥

रसिक सिरोमनि स्याम सलोनौ संग वृषभान दुलारी ॥
एक हि थार बिबिध व्यंजन जुत एकहि जल भरि झारी ॥
ललिता ललित वदन मन प्रफुलित परस्यो मुद अधिकारी ॥
खात परसपर पुनि पुनि पुलकत एकहि भली साज संवारी ॥
अतहि चोपकहि और लेहु करि नाँहि रोप कर थारी ॥
उश्न स्वाद कछु थोरहि लीजै करत बिबिध मनुहारी ॥
लखि अभिलाष बिहँसि कहै दंपति दे सुखदानि हमारी ॥
लेत ग्रास प्रति स्वाद सराहत श्री अति रुचि प्रेम निहारी ॥
बतियाँ हँसि हँसि कहत परसपर जैंयौ प्रीतम प्यारी ॥
करि जलपान प्रछालि पानि पट पोंछि प्रसन्न बिहारी ॥
ले बरबीरी जासि 'भवानी' दोउ कर आगे धारी ॥ १२७ ॥

प्यारी प्रिया को बीरी खवावत ॥

ललिता पानदान लिये ठाढ़ी,
निज कर लै प्रभु मुख ढिग लावति।
पावन चहत जवहि मन भावन,
अंचल मुख हँसि कर बरकावति।

मुदित लाल कहि यह छल भल
नहिं काचित आनि प्रिया डहकावत ।
कछु मोहि सकुच लगी ललिता की,
अब लीजे कहि बात बनावति ।
पुनि पुनि हुलासि हुलासि आगे करि
दे तिन बिबिधि भाँति ललचावति ।
धोखो देइ लाल प्रिय करगहि,
निज मुख दे हँसि ताहि हँसावत ।
लखत भवानी कौतुक मुद को,
सोलषि मनमाने सुख पावति ॥ १२८ ॥

साँवालिया मोहै मोको हेरि हेरि तिरछोंहे ।
मृदु मुसकाय छपाय ओर सों कहत बचन ललचोहे ।
जित जित जाउँ सकुचि गुरुजन की फिरै लाग तितगोहे ।
पाय अकेली निपट निडर ह्वै घेरि ठाढ़ि कर सोहे ।
मदन मनोहर सूरत बाकी ससि मुख मंद हँसोहे ।
कहत 'भवानी' रूप प्रेम की सुखद गाथ अकथोहे ॥१२९॥

स्याम सुन्दर बाकी, बड़ी बड़ी अखियाँ ॥
वारौं मैं कोटि कंज खंजन छवि

काम केतकी छवि निधि झाखियाँ ।
चंचल चतुर चितै चित चोरत,
गहे गवरता बस अनभाषियाँ ।
प्रगट अरुनता देत बताये,
मद अनुराग परम रुधि चाखियाँ ।
देषत जिनहिं कान गुरजन
तजि मोहि रही वृज की सब सखियाँ ।
सो सुख कहत भवानी बनतहि,
जब मुरि मुरि हँसि लखत कनाखियाँ ॥१३०॥

ललिता रंगी त्रिभंगी ठवन चित हरै ॥
मोरि पद दाहिनो वाम दिसि धरनि धर
अगुलिका धार वर लकुट कंखातरे ।
लटक कट वाम दिसि की कहत छबि
अकथ काछिनी किंकिनी लपठित तँहसुख करै ।
तरल तात बिसंग झुकनि बनमाल की
मुरनिवर कंध कुंडल धरै ।
मुरलिका गहि जुगुल कर सुघउ अधर
धरि लडिली ओर चष जोरी मुद सुर भरै ।

मोर के पंख सिर थहर पट फहर
उर लखि भवानी सुछवि द्रगनि ते नहिं टरै ॥१३१॥
गोपाल छवि बनत नहिं पटतरत ॥
मद स्याम सुकुमार बपुत्रन कुअंग अंग-की
लषत ही बनत नहि कछुअ बरनन करत
किंकिनी कुटिल सनि पीत पट की कसनि
फुवनि आभूषन निअबासि मनकँह हरत।
सुखद तीखी तकनि मुदित मन की हँस-
नि लषि 'भवानी' परम मोद निधि उर धरत॥१३२॥
को सके बरनि छवि सुता वृष भान की।
रूप की अधिकता स्वबस मोह कियौ
शील गुनफाँसि आनंद दा प्रान की।
अमित भूषन बसन सदुति अंगानिस जे फ-
वनि लखि छुटत पथ विरति विज्ञान की।
प्रेम की दानि सुख खानि जाकी कृपा चहि
'भवानी' तजत आस निर्बान की ॥ १३३ ॥
साँच हू राधिके तव चरन मृदु कमल ॥
रूप की पंकते प्रगटि प्रफुलित सुखद

लहलहे सदहि परिपूर्णिसोभा सकल ।
रचित रचनों बिबिध भाँति जावक
सुरंग तासु परलसत मुक्तावली छवि अटल ।
पीत पद पृष्ठि पर लसत भूषन जटित
प्रगट किंजल्क करहाट के चहुँ वगल ।
येदिका रम्य अति रुचिर नूपुर फवत
अंगुली सुछवि नष पंक्ति राजत अमल ।
अर्ध संपुटित तहँ करत रव मधुपगन
अर्ध विकसित दलनि हंस विलसत अचल ।
यह अलौकिक सुछवि नाल उरध सदहि
अवनि बिचरत लसत देत आनंद सुथल ।
पगनि प्रति माहि धरत छटा तिनतल परत
लखि 'भवानी' करत जन्म लोचन सफल ॥१३४॥

अरुन अद्भुत लसत लाडिली तव अधर ।
आइ अनुराग ब्रजलाल को समिटि करि
दृढ थल सुखद लहि वासु कीन्हों सुघर ।
कहे तव द्रुम कोई कहत बंधुक सुमन
कोऊ अनुमान करि कहत बिंबा सुफर ।

सकल उपमा उलंघिये कछु औरई वौरई
करत मुद मुक्तजग नर अमर ललित
वचनावली मधुर रस संकुलित प्रगटि
तन मन रसिक लाल को स्ववस कर।
कहि 'भवानी' दसा हँसनि की को कहै
लखत ही होत मति गिरा छकि बेखवर॥१३५॥
लाडिली तव बदन ललित राजत अलक
जाहि अवलोकि मत रोंकि लखते रहत
द्रगनि गोपाल के पर तिनाहिं पल पलक।
स्याम कुंचत सुमन स्वेत गूथित लसति
सो अकथ दरसि जो परति अद्भुत झलक।
मनहुँ शशि अमी पीवति मुदित पन्नगी
छुटति जे बुंद वपु माहि प्रगटत छलक।
चपल इत उत लखिन केलि बलि झुकत
मुखत वाहित व प्रगट जो हौति तामे हलक।
जन 'भवानी' कहत तासु के दरस को
संदाहिं वच कर्म मन माहि मेरे ललक॥१३६॥
भाल तब लाडिली लाल बेंदी लसत।

तोम तम जीतिरन भौम आयो मुदित
सोम अति चोप निज गोद लीन्हे हँसत।
फबि रही विमल मुक्तावली और चहुँ
मनहुँ उडगन लखन हेत झुकि कसमसत।
स्याम अति सै मुदित लखि 'भवानी'
कहत सदहिं यह सुछवि मन माँहि मेरे बसत॥१३७॥

राधिके ते रुई बदन समुचँद हैं।
उदधि सोभा कढ़यो अमित छवि बढ़यौ
काहि पटतिरिय दुतिवान दुतिमंद हैं।
न भजु दीसत सो तौ छटनि बढि व्याधि
जुतका हुवै सुखद कहु देत दुखदंद हैं।
यह कछु अकथ जेहि छटा अद्भुत कटत
करत येकाग्र चित हरत छल छंद है।
द्रगनि ते प्रगटता होत मृग रथ चढ़यो
शशक लिये गोद जो चिबुक तिलबुंद है।
झुकनि कच अलक अहि सद्दस अति चोप सों
होत जिय बोध यह सुधाधर संद है।
सदहि परिपूर्ण अरु अहरनिसि दिपत सम

द्रग चकोर कलखत मगन नँदनंद है ।
सबहि सुखदानि तम कुटिलता हानि
कर लषि 'भवानी' लहत परम आनंद है ॥१३८॥

तोरी चितबानियाँ स्याम सुखदानि ।
ताको स्वादु सोई भल जानत जेहि कटाछ हेरित हित जानि
चुंबक सरस लोह मन मेरो खैंचि लियौ राख्यौ तेहि सानि
चहत 'भवानी' सोई करु स्वामी अब नहिं सहहु दुसह बि-
लगानि ॥ १३९ ॥

जानत स्याम घात भलि रसिकी ।
देखत सबहि टेरि मुहि निज ढिंग
कहन संदेस व्याज भुज मसकी ।
छुवतै वाहि दोह मेरी ते
लोक लाज संग लै मति खसकी ।
कहत 'भवानी' छैल रसीलो
सकल भांति मुहि सुख दे बसिकी ॥१४०॥

स्याम सुन्दर आलि मेरे मन बसिगो ।
आयौ दरसायौ सुख मंजुल ललचायो मन अंगतन धसिगो ।
रूप त्रिभंगी ललित मनोहर मम उर अपन नयन मम धसिगो ।

छिन छिन मोद बढ़त न कढ़त
अब निज अननूपधाम लहि गासिगो।
तू जो सिखावत मोहि उचित
सो काह करौं वह चित बुध लसिगो।
कहत 'भवानी' सुखद संग लहि
मेरौ मन बरबस ही फंसिगो॥१४१॥

स्यामा स्याम नचत दोउ हंसि हंसि।
रूप चतुरता अवधि मुदित अति
दोउ सूरति दुहु उर रही बसि बसि।
अमित कला सांगीत नृत्य के करत
भरत सुख अँग अँग घसि घसि।
झपटि लपटि छुटि भजत चपल
अति कबहुँ रहति बेसरि पट फंसि फंसि।
सुरझावत नथ मन उरझावत पियत
सुछवि रस मन रुचि जसि जसि।
लहत 'भवानी' रतन मोद के
सोभा सिंधु अलौकिक धसि धसि॥१४२॥

भेंटन को स्याम सुन्दर मेरौ मन ललकै॥

जाके अंग अंगनि पर छवि को रस छलकै ।
रूप के पियूष चाखि दृग भये अपलकै ।
तन सिहात परस गात देहि सखि देत भलकै ।
हठयो दिठ 'भवानी' लोहो कहत प्रन अचलकै ॥१४३॥

खेलत रहत प्रिया पिय चोपे ॥
सरस येक ते येक गान गति छवि श्रंगार उभयजन ओपै
थिरकनिपग कस्वख अँग अंगनि निज प्रकास उपमा सब लोपे ।
झपट लपट सुख अकथ 'भवानी'
तेई जानत चित बुध जिन रोपै ॥१४४॥

रहस मगन पिय प्रीतम सोहत ।
हाव भाव दोउ अंग मनोहर
अमित प्रगट अगजग मन मोहत ।
प्रेम परसपर छकितरूप में
सुमन सुचाहत गुरुचि पोहत ।
लखत 'भवानी' द्रगन काम धुक
जेहि नहिं लाभ भाग्य को सोहत ॥१४५॥

आज कढ़यो लाल इतै बांसुरी बजाई ।

हौं गृहकारज असक्त श्रवन धुनियाई।
गुरुजन की लाज गवहिं अटा चढि धाई
मग झरोखे झाँकि लखी स्याम सुन्दरताई
उनहुँ अवली कि मोंहि सैन द्रग चलाई
रूपचाहि हौं बिलोक छकिमति बिसराई
देखि दसा मेरी उन कीन्ही चतुराई
पोंछि स्वेद मुख को करनि चल्यो गति सुहाई
हौं सकेत अवधि निपट निकट समुझि पाई
मुदित अति 'भवानी' लेहौं लाभ मन की भाई १४६

सुन ललिता प्यारी प्यारे को वेग लै आउ
स्याम सुन्दर की मूरत मधुरी नैन न आनि दिखाउ
भोरहि तै मग जोवत बीत्यो गत पछिम दिनराव
अबलौं मन भावनि नहिं आयौ कारन कौन सुनाव
हाहा करत मान मनुहारी सुखदाई यह धाव
तू चातुर मन की गति जानै मोहन मोहि मिलाव
ताहि समै छवीलौ नागर आयौ चित के चाव
परम मुदित ह्वै मिलत 'भवानी' होत न हृदय अघाव
॥ १४७ ॥

भोर दोउ सोहत सुखमा पुंज।
यक परजंक येक पटवोटै निस विलसै यक कुंज
सोये नहि आलस अग भोये द्रगभोये रंग गुंज
कढत न बैन 'भवानी' सकुचन भई गिराजनु लुंज॥१४८॥

मेरौ मनमोहन स्याम मेरे गृह आयौ
सब सो गोप्य परम चोप मोहि ढिंग बोलायौ
रस कौ खानि सुख कौ दानि कंठ सो लगायौ
अति हुलास कहि 'भवानी' भयौ मन कौ भायौ १४९॥

वृज कौछयल मेरी गइल गहतु है
मनमोहन घनस्याम रसिक वर जित
देखत तित ढाढौ दूर रहतु है
जब पावत कहुं मोहि अकेली
मरम मधुर प्रिय बचन कहतु है
ताकी सुछवि प्रेम निज पर लखि
मो मन वाही को मिलन चहतु है
चोप्यो चित लालची अति सै
बिन देखै दुख दुसह सहतु है
बनत उपाउ न कुछ सुनु सजनी

इत तौ प्रेम उत लाज महतु है।
तू दे सीख वेग सुखदाई
गनि संदेह की सरित बहतु है।
कहत 'भवानी' तुव सहाय बल
स्याम मिलन को पारु लहतु है॥ १५० ॥

आगे धैन पीछे गवाल बीच में गुपाल लाल
बन ते प्रदोस बेला बृजकौ नित आवैरी।
दाहिनी औ बांई ओर अटा पोर खोरि खोरि
ललना छवि बोर लखै जैसो जिहि भावेरी।
काहू हेरि नैन सैन काहू हंसि देत चैन
काहू के सनमुख ह्वै मुरलि का बजावेरी।
अभिमति सुखदानी की सुसीलता बखानी
मोद लहै यों 'भवानी' ज्यौं रंक निधि पावेरी॥१५१॥

गोरे गात नीलसारी धारी अति चोय
प्यारी केसन सुधार बैनी अलकै बनाई है।
बैंदी लाल भाल तीखे लोचन बिसाल आजे
नाना फूल माल अंग अंगनि सुहाई है।
आनन ते मोल खात पानि फुरै बारिजात

आली सों कहत बात प्रेम सरसाई है।
जैसी हुलसानी मोद कहे क्यों 'भवानी'
आजु राधा महरानी स्याम मोहवे पै आई है॥१५२॥

प्रिया जी हौं तौ मौहन कौं इत लाई।
मनभावतो भयो सुखदानी तजिये अब विकलाई।
जासु बिछोह मान सुन सजनी सुधि बुधि सब बिसराई।
नयन उघार निहारु धीर धरि निकट सोई सुखदाई।
देखि दसा तुव स्यामसुन्दर के तन छवि दुति पियराई।
यह संभ्रम छति लाभ ज्ञान नहिं मेंट वेग दुचिताई।
ललिता सुखद बचन कहि कर गहि हँसि उठाय बैठाई।
मुदित 'भवानी' सुन लखि लपटी गई मानि फनि जनु पाई १५३।

छैल साँवरे की मीठी मीठी बतियाँ॥
सरल सयानप साची समुझत सुन सुन सरस सुखद सब भतियाँ॥
सैननि सयन संकेत जनावति सखिन दुराइ सरद की रतियां॥
हँसि बासि करनि सरस कहि सकुचनि
सुख वक्र सन रस कन की घतियाँ॥
कहत 'भवानी' मुहि अति भावत
स्यामा संग करनि गुरभातियाँ॥१५४॥

मेघ घुमड़ि बरसत झिम झिमि ॥
स्यामा स्याम झुलत यक झूलै झमक झोक तिमि तिमि ॥
लखि लखि हंसत प्रसंसत मोरन कुहकि नचत जिमि जिमि ॥
पट फहरनि अंग अंग हुलसनि छवि
कहै 'भवानी' किमि किमि ॥ १५५ ॥

हिंडोले झूलत दोऊ छवीले ॥
स्याम गौर सुभगातनि फहरत बसन पीत अरुनीले
घुमडे मेघ मधुर धुन गरजत बरखत जल कन ढीले
पुरवा पवन त्रिबिधि नाचि कूकत केकी कुंज करीले ।
द्रुम लहलहे हरित महि बिहरत खग मृग मुद गरवीले ॥
चपला प्रगटि दुरति धन सकुचानि देखत चरित रसीले ॥
झमक झोंक पुनि पुनि मृदु चरनन झकनिन नित्त नशीले ॥
बसत 'भवानी' में निसि बिलसनि
सुगर प्रसाद बसीले ॥ १५६ ॥

उमड़ि बरसन लोग आली घन घोर ॥
गरजि गरज चपला संग बिलसै बाढै मोद न थोर ।
सुरनि भरैं झिल्ली पिक गावें राम गौड रस बोर ।
समय सुहावन लखि अति चौंपे मुदित नचत बन मोर

हरित सजल महि दादुर माते मन भायो करै सोर ।
झुकि झुकि लता द्रुमनि लपटाही हरषित पवन झकोर
पीव पीव यह छवि रस चातक सब सों कहत निहोर
छाकित 'भवानी' बिहरैं कुंजनि राधा नंद किशोर ॥१५७॥

सदन हमारे आयौ मन भावनौ ।
मुहि कामु तरु मइ ऋतु पावासि छित नभ लागत परम सुहावनौ ।
मेघ घुमड झिमि झिमि जल बरसत
हरित लहलहे तन द्रुम सावनौ ।
मोर मुदित नचि देत चुनौती कुहकि
कुहकि मन मदन लजावनौ ।
सखियाँ हौं छूटी बिरहा बिदता को मेरे मोद बधावनौ
पाय नाथ समय कहत 'भवानी' मोहि
मलारै परै अगावनो ॥ १५८ ॥

सुखद कदमतर रुचिर हिंडोला दंपति हिल मिल झूलत ।
स्यामा स्याम मनोहरता लखि रति रतिपति मद भूलत ।
ललितादिक रस रूप सयानी निज दिसतें हूलत ।
लखत 'भवानी' सो सुभ औसर अति मुद तन मन फूलत १५९

आली री स्यामा नंद किशोर ॥

जोरी बनी जथोचित वय के छवि सिंगार यक ठौर।
मुकुट चन्द्रिका सीसनि पर पट नील पीत रंग बोर।
घन दामिन पर घन दामिन तँह रवि धनदवि रविकोर।
मुरली गानि मिलै सुर पेकै मुख द्रग चंद्र चकोर।
हाव भाव से करत चतुरता निज मति बलि दुँहु ओर
पुलकित तन प्रमुदित मन दंपति झूलत रुचिर हिंडौर
झमक झोंक सुख अकथ 'भवानी'
किमि कह बुधि बल थोर॥१६०॥

सखी राधावर कुँज बिहारी॥
जाके रूप अलौकिक ऊपर कोटि मदन दुतवारी।
सीस मुकट मनि जटित बिराजत कुंडल अति छवि भारी।
पीत बसन उर माल मनोहर नाना रतन सवारी।
कटि पर ललित काछनी राजत किंकिनि मुदरव कारी।
नूपुर अलिगन पद पंकज को पिय मकरद सुखारी।
ऐसी परम मोहिनी सूरत मैं भरि नयन निहारी।
सो छवि बसत 'भवानी' उर में कैसेहु टरत न टारी॥१६१॥

बसीरी छवि स्याम सुंदर उर मोरे॥
जाके रुप सिंधु में निसु दिन छवि के उठत हिलोरे।

दीरघ नयन अरुन अनियारे तकनि तिरीछे कोरे।
मृदु मुस्क्यान छवीले मुख की देति सुधा उर घोरे।
वाकी धज अधरन धर मुरली भरति सुरनि थोर थोरे।
अग जग जीव सबस करि बरबस परमानँद रस बोरे-
जो सुख मोहि पल पल में लखि सब सुख यक ठोरे।
सुरुचि 'भवानी' छक हय हरिस सब सों कहत निहोरे १६२

सखी हौं तौ स्याम सुन्दर लखि मोही॥

जाके गात मनोहर ऊपर पीत पिछोरी सोही।
कटि काछिनी किंकनी वरमाला बिबिध रतन की पोही।
सीस मुकट श्रवनन बिच कुंडल मुख मुरली दुख द्रोही।
मृदु मुस्क्यान तिरीछी चितवन मम मन बस रह्यौ वोही।
छकिति थकति अवितासु रुप में मेरौ मन चित बटोही।
धन्य भाग माधुरी मूरति की छवि जिन द्रग भरि जोही।
कहत 'भवानी' रुचि निज जन की घृत जगतासु छोही॥१६३॥

आज छयल वृज खेले आँखि मिचवा।
चंद प्रकास निसा अति सोभित
वृंदा विपिन करील बगिचवा।
संग सहेली सब अलबेली बैसिन मन मुद सिचवा।

श्री वृषभान सुता छवि आगर नागरि सकल भांति तिन बिचवा

काहू के द्रगनि आप कर मूंदत
भजत दुरत सब आप नागिचवा ॥
सो जब गहन लालित अति आतुर
प्रगटि तिहाय जो मतेहि हिचवा ॥
कहत 'भवानी' सो नयनन तैं
हरितन अनुदित तासु अपिचवा ॥ १६४ ॥

अलबेली सांवरौ बसि रहो अखियन मोरी हो।
हौं तौ अचानक जाइ कढी उत नंद बगर की खोरी।
देखि बदन वृजचंद सुखद कौ ह्वै गई छकित चकित चकोरी हो।
रसि मनि देखि दसा मम सकुच ग्रसित वय थोरी।
बतियां सरस कहत औरन सो हंसि तकि तकि मोरी वोरी हो।
बाठी चाहि मोहि मिलिवे की उर गुरनन तेहि ठोरी।
बांधी लाज देह रहि ठठी चित गयौ चितवन चोरी हो।
अब यह मतौ ठनौ मन मेरे लाजनि गड चहौ होंरी।
प्रान भाव तो भुजभरि भैंटौ पियौ सुख सिंधु हिलोरी हो।
इमि जनि कहसि हहा काहू सो पैया परौं मैं तोरी।
कहत 'भवानी' सुखद स्याम सौं मिलहु व्याज करि होरी हो १६५॥

खेलै री मन मोहन होरी ॥
ले करि कनक पिचक रंग केसर
अबीर गुलाल कसै कटि झोरी।
उति वृषभान सुता छवि आगरि नागरि नवल लिये संग गोरी।
सरस येक तें येक चातुरता करत परस्पर हित चोरी।
देत भुलाय भिगोवत सखियन घाली पिचक प्रिया मुख ओरी।
आवत रंग बचाइ करन द्रग झपट लाल मुख मोड़त रोरी।
मेलत मूठि चपल गहि करसो गुलचे लाल कपोल किशोरी।
हँसि कछु गाइ लुभाय लाल मन नैनन चाय चली मुख मोरी।
प्रीतम लपटि गही पिय प्यारी मोद अनुराग मनो तन वोरी।
ताल बजावत गावत संगकी लखत
'भवानी' छवि त्रन तोरी ॥ १६६ ॥
घाल्यो है हिंडोरा आज वृन्दावन वृजराज
बन्यौ सो अनूप साज मन का ललचावेरी।
रूप सील वारी सब पहिरे सुरंग सारी
वृज की सुकुमारी तामे स्याम अति भावेरी।
नैननि कटाक्ष कै कै हेरै हँसै चित दैके
गावे मृदुतान लैके सुख कौ सरसावेरी।

तापर बिराज झूलै स्याम ।

स्याम मोद फूलै ललिता भवानी परम चोप सौं झूलावेरी ॥१६७॥

आज मुदित वृषभानु किसोरी ॥

हरि कौ मुकट धारि निज सिर,

सज स्याम सीस बेनी छवि बोरी ।

सारी स्याम स्याम तन साजी,

पीत बसन निज अंग में गोरी ।

रंग रंग मिलि छवि में सानी,

रूप सिंधु उमड़्यो मित फोरी ।

मुरली बजावति अतिरुचि गावति,

प्रियहि नचावति निज हित डोरी ।

सरहि सखिन कौं बोलि देखावति,

कहि लाडिली हरै मति मोरी ।

ये बहु प्रेम प्रबलता प्यारी,

तुव रंग लै निज दियौ तुमको री ।

यौं कहि छकित 'भवानी' देखै,

जैसे चंदहि निकर चकोरी ॥ १६८ ॥

मोह्यौ मोहि मुरलिया प्यारे घनस्याम की ।

मधुरे सुरनि बाजी सुनि मन भयौ राजी,
अब नहिं मोहि भटू सुधि तन धाम की ।
पवन पूरन जैसी चलनि तैसी मन की,
हरनि धुनि राधे राधे नाम की ।
कहत 'भवानी' मेरे द्रगन समानी,
रहे साँवरी अनोखी छवि बदन ललाम की ॥ १६९॥

या छविबारौ बाँके ।

रसिक अहेरी बाँको रसिक अहेरी,
बसि वृन्दावन में हत हियौरी ।
मृग मन मोर परम चंचल मृदु मुरली बजाय कै मोहि लियौरी ।
मंद हँसनि सों ढिग थर करकै द्रग कटाच्छ सर ताकि हियोरी ।
लग्यौ आइ कसकत न निकसत जानौ पूरौ काम कियोरी ।
देखि न परत कहाधौं केसौ जात कौन बिधि घाव सियौरी ।
छिन छिन सरद परत अब आवत रह्यो उपाय न और बियो री ।
कहत 'भवानी' स्याम सुँदर के गात परसपर चहत जियोरी ।

सुनु सखि नवलकिसोरी ।

राधा वरनायक सुखदायक सो तू कहा मौन व्रतसाधा ।
जासु कटाच्छ क्रपाहित संकर मुनिवर धरत समाधा ।

सो बिन तोहि मीन जियौ व्याकुल ताजि के नीर अगाधा ।
का भ्रम मान आन मान किधौं नागरि मोहन बिन अपराधा ।
तोहि उन्है अंतर कहु कैसो तू ताके तन आधा ।
छति अनुलाभ विग होग हरत वढित* उपाधा ।
कहत भवानी (अपूर्ण) ॥ १७१ ॥

साँबरो नीकौ बनौ बनमाली ।
होरी की धूम मचावत गावत मो पै पिचकारी हँसि घाली ।
होहु गुलाल लगाय लाल मुख गुलचि दई करताली ।
झपटि 'भवानी' कंठ लगायौ कीन्हों मोहि मतवाली ॥ १७२ ॥

सखि मम द्रग बसि साँवलि सोभा ।
जाके अंग अंग अवलोकति पटतर लहत न मनमथ छोभा ।
कुंडल मुकट पीत पट काछिन सुमन माल जँह अलिकुल लोभा ।
छकित 'भवानी' कंठ लगायौ पल पल उलहत मुद तरु गोहा ॥
१७३ ॥

कुंज भवन आसीन स्याम स्यामा जहाँ
सोभा चौदह भुवन समिट राजत तहाँ
मुकुट चंद्रिका सीस बिबिध मनगन मढ़े

---

* यह छन्द अशुद्ध है ।

रवि ससि के मानौ गोद अपर शुभ ग्रह चढ़े।
कुंतल कुंचित कुंडल अति छवि लोलहे
अधर बिधु ढिंग अहिसिसु मीनहु करतल लोलहे।
अधर मधुर मुस्क्यान कटाछ द्रगन के।
हरत परस्पर चित्त परम हित जानि के।
प्रेम प्रफुल्लित गात धरें गल बाहियां
सारद छकि रही कहत की पटतर नाहियाँ।
कह स्रुति लगि कहुँ प्रगटि कठिन मृदु बोल है।
जीव चराचर सुबस करत बिन मोल हैं।
यह अनूप सौभाव रमन द्रगधारिये
कहत 'भवानी' तिन पर सरबसु बारिये ॥१७४॥

प्यारे के मिलन को मेरो जीव उमाहुरी
कह सौ जतन मिलै मन मोहन जासौं मिटै सकल उरदाहुरी।
तू सुखदान परम हित मोरी पर यह मरम न काहू जनावरी ॥
कहत 'भवानी' हरषि उरभुज भरि मिलहु राधकानाहुरी १७५

प्यारी चलि आजु प्यारे मिलवे कौ दाँवरी
कुंज भवन में लाल अकेलौ बिधि-
संजोग भल्यौ बनो है बनावरी।

तोरी चाह प्रगट है कीन्हीं उनहु के
चित तेरे मिलबे कौ चावरी।
कहत 'भवानी' स्याम सुन्दर लहि
परम मुदित है जियरा जुडावरी ॥१७६॥

मन में मेरे उमाह सखीरी।
आजु स्याम मैं होरी खेलिहौ केसरि रंग सुरंग।
अपने कर अबिर गुलाल की मूठ मैं मेलिहौं।
आवत रंग गुलाल लाल कौ
करि उपाइ मन भाइ झेलि हौं।
झपटि लपटि गहि लै हौं
लाल कौ लोक लाज कुल कान पेलि हौं।
औसर भलौ मिलौ सुन सजनी।
पाइ मनोरथ सुफल बेलि हौं।
कहत 'भवानी' सुख दानी सो
बिबिध भांति मन मुदित केलिहौ ॥१७७॥

प्यारी मोहि न छैल उमह्यौरी
सो निहारु अलि लाभ लह्यौरी।
होड़ा होड़ी खेलै होरी डोलत यह उछाह्यौरी।

रंग चलावै गुलाल उड़ावै गावत चित जो चाह्योरी

कहत 'भवानी' हुलसे बानी आनंद सिंधु अथाह्योरी ॥

१७८ ॥

रंग भीनौ लाडलौ मोसै खेल्यौ आजु होरी ।

हौं डगर अकेली जाति चली ही आइ गयो चोराचोरी ।

रंग नाइ मुख अबिर लगायौ हँस कह्यौ भलि मिलि गोरी ।

हौं हौं सकुची इत उत अवलोक्यौ कौन लख्यौ तिहि खोरी ।

झपट लाल गलबाँहिं मेलिके द्रगन आँज दई रोरी ।

छैल छुटन की जतन करत वह माचि रही तँह झकझोरी ।

कुंडल उरझ गये मम लटसौ अलकनि बेसरि मोरी ।

सुरझाई दुहँ दिस तै नागर बिहँसि प्रेम रस बोरी ।

हौं छकि रही मुख चंद बिलोकत लाल लखत मोरी ओरी ।

तिहि अवसर आवत पुरजन लखि लजि डगरी मुख मोरी ।

कहत 'भवानी' मो मन अवलोक्यौ बध्यौं है वही सुख डोरी ।

१७९ ॥

मनमोहन से अलबेली छबीली खेलत होरी

झपटि लपट मेलति रंग झलत

लाज अकाज समुझि दई टोरी ।

दोउ दुहन मुख अबीर लगावति
करत बचाव होत झकझोरी।
हँसि हँसि ताल बजावत गावति
मुदित 'भवानी' संग की गोरी ॥१८०॥

* नीकौ बनौ बनमाली साँवरौ नीकौ बनौ।
होरी की धूम मचावत गावत मोपै पिचक हँसि घाली।
हौंहू गुलाल लगाइ लाल मुख गुलिच दई करताली।
झपट 'भवानी' कंठ लगायौ कीन्हौं मोहि मतवाली ।१८१॥

गोपिका अति अनुरागी देखि रूपनिधि जोरी।
कहि इन ब्याहु लाहु लोचन को जीवन को फल सो री।
कुंज भवन मंडप अति सोभित आगेहि बिधि बिरचो री।
इहि दूलह घनस्याम मोर सिर दुलहिन करहु किशोरी।
पहिराई चूनर सिर मोरी मुख मंडित करि रोरी।
पीतांबर सो ग्रथंत करिकै फेरी अति मुद भौरी।
कछु इत कछु उत रंग बोरि मंगल गान करत दुहुँ ओरी।
पुनि पुनि पुलिकत बदन बिलोकत जैसे बदन चकोरी।
दंपति मुदित उमाह चरित लखि सखियन तकत लजोरी।

---

* कुछ भेद के साथ यही पद दूसरी बार आया है।

सो छवि बसति 'भवानी' के उर किमि बरने मति थोरी।

मोसो छैल बृजराज होरी खेलन आयो ॥

संग लिये अलिबलि सहेली फाग साज सज धायौ।
लेहु गुलाल उताल रंग सखि खेलिये मन को भायो।
यों कहि झपट निपट नियरानी उतहू उन फगँवायौ।
भरि उमंग रँग मेलि लाल पर अबीर कपोल लगायौ।
दोउ कर एक कमल कर गहकै हँसि मन लाल लुभायौ।
द्रग अंजन सो रजंत कीन्ह निरंजन नाम छुड़ायौ।
नैन नचाय बजाय ताल हंसि लखत बदन छवि छायौ।
लाल मुदित है कहत 'भवानी' हम सब विधि सुख पायौ ॥१८२॥

मो नैन में प्यारो मुरलिया बारौ बस्यौ ॥

मोर मुकट मकराकृत कुंडल श्याम गात पट पीरौ कस्यौ।
खेलत फाग अपर सखियन सों मोको देख रंग मेल्यो हँस्यौ।
कहत 'भवानी' हों हरसानी जब गुलाल मुख मेरे धस्यौ १८३

साँवलिया पाय मैं हरखानी ॥

आज अचानक जात चली हों देख परचो तँह छैल छबीलो।
झपट हिय लपटान बिबिधि भांति आलिंगन कीनौ ।

मनमानौ सुख तासौं लीन्हों बिरहा तपन सिरान।
समुझ समुझ सुख कहत 'भवानी' मन मोरौ मृदु
सिंधु समान्यो चिरंजीव सुखदान ॥१४८॥

राधा माधौ रूप निहारौरी॥
मम सीख उरधारौरी।
धर गलबाँही हँस बतराहीं खेलत मोद अखारौरी।
कहत 'भवानी' हौं लख मोहीं कौतुक प्रान पियारौ १८५

लाडिलौ होरी खेलै रंग भीनौ।
फेंट गुलाल हाथ पिचकारी रसिया बैस नवीनौ।
धाइ नाइ रँग अबीर मलत मुख
गाय फाग लख लीनौ प्रबीनौ।
कहत 'भवानी' झपट लपटगौ केलि कलानि ॥१८६॥

हो नँदनंदन वृषभान कुँवर होरी खेलत कुंज गलिन में।
ढप गुलाल पिचकारी रंग दोउ लिये संग आलिन में।
रंग चलाय अबीर उड़ावत गावत तान भलिन में।
अलि चख मगन 'भवानी' रूपनिधि मरकत कनक कलिन में
॥१८७॥

फाग में प्यारो मोहन मोहि मिलौ॥

मच रही धूम खेल होरी की सखिन समाज ठिलौ ।
बजत बाद्य बहु गान चहूँ दिसि रंग गुलाल मिलौ ।
मधुरी तान सुखद मुरली की सुन मम सीस हिलौ ।
चतुर सिरोमन लखि सो लीन्हौ मेरी ही ओर पिलौ ।
हँस कह सुरत करहु वादिन की तुम भल दीन टिलौ ।
हौं निसि दिन चाहत तुम ही को कहिलो करहु गिलौ ।
बचन प्यार जुत सुन प्रीतम के मन मेरौ पिघलौ ।
लहि सुख रास 'भवानी' मिलन की तजि कुल कान मिलौ ।
१८८ ॥

स्याम मन मेरे बसी छवि तेरी ॥
झुकति मुकुट कुंडल की हलिकन विलसन प्रीत पिछौरी ।
मधुरी हँसन नुकीले नैननि चितै करज चितचोरी ।
मुदित 'भवानी' कहत प्रेमसों श्रीवृषभानु किशोरी ॥१८९॥

साँवरे मोपै कियौ कछु टौनौ ॥
जोरि जोरि चख मोरि मोरि मुख बस कियो रूप सलौनौ ।
कहँ अब लाज कानि गुरुजन की है गई जो कछु हौनौ ।
द्रवति 'भवानी' कियो मोर मन ज्यों सोहाग को सौनौ ।
१९० ॥

स्यामा स्याम अनूप फाग महँ खेलत चोये ।
सखि जूथ झपटै दुहँ दिसि तै देत अबीर रंग तोये ।
बाजे विविध बजावत गावत गोत धर्म पथ लोये ।
रंग भिगोय गुलाल मलत मुख प्रगट नेह जे गोये ।
लपटत लजत छुटत पुनि झपटत तन मनसिज के ओये ।
हरि हरिसंग लाज गवन कियौ जोत प्रेम पग रोये ।
कहत 'भवानी' जुगल केलि को कह्यौ न परत सुख मोये ।
१९१ ॥

मुरलिया स्याम की चितचोर ॥
एक समै वृन्दावन बाजी सरद निसाहो
सदन बिराजी सुनत छकी मन मोर ।
लोक लाज की संक न आई ऐसी ऐसी ।
कछु मम मति बौराई विवस गई वह वोर ।
देख दसा वाकी कहत 'भवानी'
कानि करै मद मुदरस सानी
मुख लागी नवल किशोर ॥ १९२ ॥

सलौनी साँवली सूरत मनोहर माधुरी मूरत
छवीली नंद दुलारे की बसी मन मेरे प्यारे की ।

चरन कोमल कमल राजै तिनहुँ पर नूपरा बाजै
ललित कछनी कलित काछै किन किनी तासु पर आछै
लसै पटपीत बनमाला कौस्तुभ अंक श्रीबाला ।
भुजा भूषन सहित नीके काम नाशनि सब ही के ।
चपल कुंडल अलक सोंहै अधर मुरली खलक मोहै ।
झुकै तँह नाक कौ मोती लखेते को न बस होती ।
भ्रकुटि औ खौर अति बाँकी मुकुट हरै सोभ सविताकी ।
कटाछै मोहिनी आखै 'भवानी' ताहि अभिलाखै ॥१९३॥

कछु मोपै जादू डारौ, यह नंद का दुलारौ ।
हेरति हँसनि माधुरी बोलन मोहित मन कियो म्हारौ ।
जित देखत तित साँवल सुंदर प्रीत बसन उर धारौ ।
कहत 'भवानी' छिन पल मोहन बिसरत नाहिं बिसारौ ॥
१९४ ॥

मुरलिया तेरी कान्ह बानत बेस ॥
साज तीन सुर गाम प्रगट करि राग अलापति देस ।
त्रनन चरत पसु पय न पियत सिसु पवन न चलति मदेस ।
जमुना नीर तज्यो निज वही वो मग थक रह्यौ निसेस ।
हम जो लाज बंद में अबलौ अँगये त्रिबिध कलेस ।

बंदी छोर भई अब साँची दीन्हौ सुख उपदेस ।
हम पायौ पद जाकौ जाँचत सुरनर सिद्ध अजेस ।
कहत 'भवानी' है सुख दानी ऐसी बजायौ हमेस ॥१९५॥

लखौ लखौ स्याम सलौनौ लखौ लखौ ॥
मधुरे बैन सुधा ते अति प्रिय करि मुख श्रवन न चखौ चखौ ।
गुरुजन लाज लोक मर्यादा गुनि मम सो मन नखौ नखौ ।
कहे 'भवानी' नंदलाल छवि उर द्रग माँहि रखौ रखौ ॥१९६॥

मुरलिया आज बोलत मधुरे बोल ॥
लाल अधर रस पियत निरंतर प्रभु नित करत कलोल ।
जाके छिद्र छुपावत मोहन कर अंगुली कर लोल ।
ता सम को बड भाग 'भवानी' पाई भक्ति अडोल १९७॥

अरी मुहि मोहन प्यारौ देखन देहुरी ॥
साँवरी सलौनी छवि पीरौ पट रह्यो फब
तासौं मेरौ जुर गयौ साँचौ सो सनेहुरी ।
चितवन चितचोर हंस मुद मन घोरै
अपर अंगन सब सुखमा कौ गेहुरी ।
कहत 'भवानी' सुन मेरी सिख सुखदानी
सफल जनम लाहु लोचन कौ लेहुरी ॥१९८॥

मेरा पीतम मुकटवाला सलौनौ नंद कौ लाला ।
सजै पटपीत वनमाला लट्टू है जापै वृजबाला ।
नुकीले नैन रतनारे किये सुरमा से कजरारे ।
सभी उपमा तहाँ हारे जुरे चख ते न हो न्यारे ।
बजावै बांसुरी नीकी सुनावै तान प्रिय जीकी ।
बढावै चाह मर्मी की सिरावै ताप सब हीकी ।
सुहाई चाँदनी रतियाँ कही मोहन मधुर बतियाँ ।
करी चित चाव की छतियाँ लगाई लाडले छतियाँ ।
सोई मेरे द्रगों झूले कोई छिन पल ही पल भूलै
मिलन को चाह चित हूलै 'भवानी' मोद में झूलै १९९॥

मोहन मोमन माँह बसत है ॥

श्रवन सुहात श्रवन कल कीरत नैनन सुन्दर श्याम लसतु है ।
रसना गहन गही चातक की बचन निरंतर नाम गसतु है ।
त्वचा चहत आलंगन को नित नासा गंध जो गात धँसतु है ।
तू बावर गति देखि सयानी ज्यों चाहत त्यों मोहि हँसत है ।
हौं परवस कछु खबर न मोकों कहा कान्ह कुल काह खसत है ।
अनल जरे को अनलहि औषधि वृथा भूर उपदेस कसत है ।
२०० ॥

आलीरी मन माहिं मोहि साँवरो सुहाई ॥
जाकी अवलोक सोभा रतिपति सकुचाई॥
सुखद मयंक ऊपर, पीत पट यों छवि पाई।
मैचक बार दयै मनो चपला रही छाई।
सीस मुकुट जटित रतन जोत जगमगाई ॥
मनहुँ नील शैल सिखर भानु बस्यौ आई ॥
स्वेत सुमन तुलसी दल रचित माल भाई ॥
जनु तमाल विटप लसति बक शुक समुदाई॥
मुरली मुख कंज पगन नूपर ध्वनि लाई ॥
मुखरित कलकंठ भ्रमर परम रूच लुभाई ॥
कहा कहौं कहि न सकत रूप की निकाई॥
छकि 'भवानी' निरखि निरखि बारि बारि जाई ॥२०१॥

मेरो मन आजु सखी साँवरे से अटको ॥
जाके सुभगात लसत वागौ पीर पटको ॥
सीस मुकट तिलक भाल कुंडल श्रुत लटको॥
चारु तकन मधुर हँसनि निपटत दुख घटको
बिकल देखि मोहि करत जंत्र मंत्र टटको॥
लग्यौ नंदपूत नहिं भूत वृथा भटको ॥

वेगि ही मिलाव आन हितू नवल नटकौ ॥
लहि 'भवानी' मोद लहै शोक खटकौ ॥२०२॥

हौं तौ कछु कह न सकत साँवरी की शोभा ।
अंग अंग अवलौकि जासु अति सै मन लोभा ।
कहि कछु हँसि द्रगन जोरि अंग को मरोरयौ ।
प्रेम दसा प्रगट अवसि माने न हटक छोट
भटक मोहि बुध बिसेखै मेरौ चित चोरयौ ।
चलन चटक अलकै लटक भृकुटि मटक देखै मेरे
द्रढ मतौ यह कहत हौं पुकारे ।
कोउ कछु कहौ 'भवानी' मिलहि लाल प्यारे ॥२०३॥

कुंज सदन में सोहत जोरी ॥
जैसहि परम छबीलौ साँवलि तैसहि छवि निध राधे गोरी ।
नीलाम्बर गोरे तन बिलसत श्याम गात पर पीत पिछौरी ।
प्रिय जी निरखत मोहन कौ मुख
प्यारौ निरखत प्रियाजी की ओरी ।
परम मुदित ह्वै धर गल बाँही
बतियाँ कहत सरस रस बोरी ।
लखत 'भवानी' लहत परम मुद

किमि बरनौं छवि मति अति थोरी ॥२०४॥

सखी वह मोहन मीत हमारौ ॥

सीस जरकसी पाग मुकट कस्यौ स्याम पीत पटवारौ

बिबिध सुमन के बिबिध विभूषन सज कियो वेख लुभारौ।

मनौ रतिपति रितुपति निज

आश्रम राख्यौ समुझ प्यारौ।

चारु चखन की चंचल चितवन चरित चित चिसकारी।

हरखत हँसत हुलास होत हिय हेरत मुख हँसनारौ।

अब मोहि और सुहात न कोऊ जो मन हरन निहारौ।

कहत 'भवानी' व्रज-स्वामी मेरौ सरबस प्रान अधारौ।

२०५॥

द्रगन बस दम्पति की रहि केलि ॥

स्याम स्याम प्रेम छवि माते भुज अंसन रहि मेल।

बचन कहत मृदु बदन बिलोकत मुदित लाज पथ पेलि।

लखत 'भवानी' सो सुख शोभा फलत मनोरथ बेलि।

२०६ ॥

हमारे साँवरौ बसौ नैन ॥

जाके अंग अंग अब कति लागत छवि गति मैन।

वह जोरनि चख हँसि मुख मोरनि बोलनि मधुरे वैन।
बरनन सो सुख सकत 'भवानी' जो पावत मन चैन।
२०७॥

देख्यो साँवरो भई दंग॥
जाकी लखत अलौकिक शोभा मन सकुचात अनंग।
श्री वृषभान लली सँग बिहरत मुदित उड़ावत चंग।
कहत 'भवानी' रूपसिंधु में अद्भुत उठत तरंग।
२०८॥

* हेली देखि साँवल रूप॥
काहि कहौं कछु कह न सकत हौं त्रिभुवन सुखमा भूप।
तैसहि अंग अंग पर फवि रहे भूषन बसन अनूप।
कहत 'भवानी' मोमन बस्यौ वह नागर नट स्वरूप॥२०९॥

स्यामास्याम हिंडोला झूलत॥
झकि झकि देखत बादर पुलक
गात मुद जल द्रग बरखत।
गद गद सरहत सादर दम्पति रूप
सूर लखि सटके रति मनसिज हैं कादर

---

* 'हेली' की जगह 'सहेली' पद होगा।

लखत 'भवानी' छकित मोर मन मुदि बस गावत दादर ॥
२१० ॥

स्यामास्याम के लवलीन ॥

द्वादसौ आभूषननि निज अंग भूषित कीन।
भाल पर टीको जटित मनि माँग मुक्ता धारि।
शुभ ग्रह शशि गोद बिलसत उपर उडि तम टारि।
नासिका बेसर छवीली श्रवन में त्राटंक
मदन के जग छत्र कुंडल छीन लीन मयंक।
नील रंग सारी अपर पट अरुन अतिहि अनूप
हेमगिर जनु जलद छाये तँह दुरयौ दिन भूप।
चूरी कंकन मुद्रिका कर लसत सुखमा सार
जनु अमर पुर घिरे घन गन सुमन रच्छक द्वार।
अकथ छवितर महासोभित रचित मनिगन हार
गुरु सदन जन आये जुर मिल बिबिध बिबिध प्रकार
सुछबि कट पर किंकिनी मनि जटित मृदु रहि बाजि।
सतनु रितुपति घेरि कूँजत बिबिध रंग खग राजि।
मगन नूपुर मुखर जन अलि अवालि पंकज पाइ।
लखि 'भवानी' प्रिया सोभा लाल लपटी धाइ ॥२११॥

श्रीवृषभान या छवि वषान ॥

सारे हौ श्रंगार साजे स्याम मन मुद दानि

उपटनौ करि न्हाइ सुन्दर रुचि सुवास लेपनि साजि ॥

सुरभि तैल अरु धूप कौ निज अंग की छवि छाज ॥

केस सुचि करि कबरि पाटी अलक सजि लवलीन ॥

भाल खौर विचित्र रचि रुचि सुरंग बदन दीन ॥

परम मृदु अंजन द्रगन दै चारि बीरी पाइ।

बिबिध रंग सरंग माला सुमन उर पर धारि।

सुरँग जीवक रुचिर रचना चरन कमल सवाँरि।

मुकर मुख लखि मधुर मृदु हँसि मिली मोहन धाइ।

मौहनी मूरति 'भवानी' द्रगनि में रही छाइ ॥२१२॥

साँवरे की हौं छनक छवि देखी ॥

अति से रसिक मोहिनी मूरति हँसि मोहि दीन कनेखी।

भूली देह गेह सुधि सजनी नयन रहत अनमेखी।

कहत 'भवानी' सुखद स्याम मिलि किमि सुख लहहुँ विसेखी।

२१३।

साँवालिया मेरौ मन हर लीन्हौ ॥

चख चख जोरि भोरि करि मोकँह बदन मोरि हँस दीन्हौ ॥

लखि यह दसा गसा मन मेरौ जान तनहि का कीन्हौ ॥
कहत 'भवानी' सब सुख खानी प्रान भाव तौ चीन्हौ २१४॥

ऐजू प्रात दोउ लाडिलो लाल जागे ॥
सहचरी सुघर निज धर्म सेवा
कुशल मुदित ढाढी भाई आइ आगे॥
कुंजन ते निकसि सुचि रदन मुख
धवन करि जमुन के तीर आयेनुरागे ॥
अली प्रिय संग लिये पट 'भवानी'
दिये मुदित मज्जन सुरुचि करन लागे ॥२१५॥

प्रिया प्रीतम महा मुदित खोरै ॥
कबहुँ भीजत गात मज्जन करत कबहुँ बरबारि बीच हिलोरे।
कछुक इत कछुक उत सखी प्रिया
लाल मिल नीर कढो करनि दुँहु ओरे।
करत क्रीडा बिबिध भाँति दोऊ
रसिक 'भवानी' परम मोद बोरै ॥२१६॥

बिहर जल रसिक दोउ तीर आये।
त्याग भोग बस्तनि दिव्या सजे सुरंग
जाति नहिं बरन छवि अति सुहाये।

चंद्रिका मुकट सिर तिलक अनुहरत
तन अपर भूषन उचित अंग छाये।
पादुका पगन धरि मत्त गजगतिनि
धरि आइ श्रम 'भवानी' लुभाये ॥२१७॥

अहो मोको प्यारौ ब्रज कौ सांवरौ
सुठ सुंदर अति सुकुमारहो।
माथे के सरखौर बिराज ही
दृग सोभित अति अनयार हो।
जाके सीस मुकुट लसै मोर कौ
अरु कुंडल सुषमासार हो।
पीत बसन फवे गात में उर
मनिगन मुक्ता हार हो।
प्यारौ अधर मुरली धरे
कल गावत बिविध प्रकार हो।
यह रूप 'भवानी' उर बसै किमि
छवि कहै अकथ अपार हो ॥२१८॥

रहस रसिक मुदित नचत राधे बनमाली ॥
मंडल कर जुवत नवल धारे पट सुरँग अमल

जोर जोर पान कमल चतुर चपल चाली।
प्रगट अमित रूप श्याम बिलसत बिच द्वै द्वै बाम
निज निज पर अधिक प्रेम मान मुदित आली।
करत गान अति उमंग भरत तान सुर उतंग
अंग भाव की तरंग बंधि बंधि पाली।
ग्रीवा झुकन छहर अलक बदन विसम बुंद झलक
बंक द्रगन लखन ललक रूप छवि बिसाली।
कंकन रव चरन खनक किंकनि नूपुर की झनक
थिरक थिरक पगन तान ले गति उताली।
कोऊ सखि थकित रहति पीतम उर लपट जाति
राग ताल नहिं चुकात रस मद मतवाली।
औ कपोल परस पान अति प्रिय नागर बखान
करत तास श्रम बिहान रहस रुचिर ख्याली।
खसत सुमन माल टूट मनि गनि आलि करत
लूट गोपी बरवेष संभु लखत त्याग ताली।
सुरव संभु दुंदभि बजाय हरखत झर मन लियाय
लख 'भवानी' हरस विबस नचत कर उछाली २१६॥

लखि स्यामा स्याम सुखद जोरी ॥

साँवल सुंदर रूप उजागर त्यों राधे तन दुति गोरी।

पीत बसन की शोभ अलौकिक नीलाम्बर नहिं छवि थोरी।

केसर खौर भाल भलि भ्राजत बेंदी रुचिर सुरँग रोरी।

अधर मधुर ध्वनि मुरली बजावत बतियाँ करत सुरस बोरी।

॥२२०॥*

---

* दूसरी पुस्तक में इस के आगे 'अपूर्ण' ही लिखा है।

शब्दार्थ

पृष्ठ १

औलौकि=देखकर
अबुझ=अज्ञानी
समुझ=ज्ञानी
झमकि झमकि=ताल के साथ
छवित=छविवाला
ह्वै=होकर
रूप अगाधे=रूप के समुद्र में

पृष्ठ २

समाधे=साधे
मनबच क्रम=मन, वाणी, कर्म
आराधे=आराधना की
चपलायुत=विजली से भरे
मधुरे सुर=मीठे स्वर
वरहिं=पीछे चलती हैं
पिक=कोकिल
भ्राजति=चमकती है
त्रिविध समीर=शीतलमंद, सुगन्धि
अवनी=पृथ्वी
अकथ=जो कहा न जासके।
उपराजति=उत्पन्न करती है
काको=किसका
बदन=मुख
सदन छवि केरो=सुन्दरता का का घर है
निबैरो=फैसला (न्याय)
निचोर रूप के=रूप का सार
झख=मछली

पृष्ठ ३

यकठौरी=एक जगह
भारति=सरस्वती
अघगन हारी=पापों का नाश करने वाली
नहिं घटि कोऊ=कोई छोटा नहीं है
ओऊ=वह भी
जोऊ=देखा

पृष्ठ ४

अघ के मल=पाप का कीचड़
पेखि=देख कर
गेह-उर=हृदय रूपी घर में
निहोरत=निहोरा करती हूँ, खुशामद करती हूँ
नागरि=नगर की रहने वाली, (यह शब्द यहाँ साधारणतया सुन्दर स्त्री के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।)

लीने=लिये हुए
मति की आगरि=बुद्धिमती
मीड़ि=मसल कर

पृष्ठ ५

पाग=पगड़ी
लटू ह्वै=मुग्ध होकर
अनबद्ध=बन्धन रहित
निगमहू=वेदशास्त्र
ओकु=घर
रसन (रशना)=कांची
थोकु=समग्र रूप से
मुदको बलकु=प्रसन्नता की उमंगें

पृष्ठ ६

अहि=सर्प
कुंडलमकर=कृष्ण के मकराकृत कुण्डल प्रसिद्ध हैं
भ्रमरिजनु पुत्रिका=मानों दो भौंरियाँ
दाम=माला

पृष्ठ ७

नौवति=नौबत, नगाड़ा
वासना=इच्छा
पटतर=समान
हयसात=सप्तार्चि·सूर्य
दुजलात=चन्द्रकिरण

पृष्ठ ८

चातकी=पपीहा
वपुकाम=काम देव का शरीर
अहि अरि पखी=मोर पंख वाले
झखीं=मछली के समान
कांख=बगल

पृष्ठ ९

विथलित=बिखरी हुई
नखरदछत=नाखून और दांत के निशान
विहत=बनी हुई
सिसकत=चाहती हैं (यहाँ उपलक्षण मात्र लिया है)

पृष्ठ १०

मोतन हेरि=मेरी तरफ देखकर
सकर=शक्कर

पृष्ठ ११

चामीकर=सोना
केकीन=मोर

पृष्ठ १२

अविचर=जड़
रतिपति=कामदेव
चख=चक्षु, आँख
गुहरावत=बुलाते हैं

पृष्ठ १३

जकिसी=जड़ की तरह
नियराय=पास जाकर
सिरनि=सिर पर
सुवन=सुत
वियो=दूसरा

पृष्ठ १४

कित=किधर
धाई=दौड़ी
त्रैताप=तीनों ताप, आधिभौतिक, आध्यात्मिक और आधिदैविक
बौरायो=पागल हो गया

पृष्ठ १५

खोर=गली
बरक्यौ=रुका
नायो=डाला
दृगकोरे=कटाक्ष करके
इन्दीवर=कमल
मार=कामदेव

पृष्ठ १६

निदरतगज=गजगति का निरादर कर रहा है
कीलो=वश किया

पृष्ठ १७

पिछौरी=दुपट्टा
पिली=पिलपड़ीं

पृष्ठ १८

फंदते=फंदे से
माँचो=मच गया
दिनन की थोरी=थोड़ी उम्र की

पृष्ठ १६

पिचकन=पिचकारी
बेसर=बुलाक
अरजायो=उलझ गया

पृष्ठ २०

तमचुर=मुर्गा
निचोर=सार
सुरति=याद
अंसनि=कन्धों पर
ठाटठटतु=साज सजारहा है
मृगमद=कस्तूरी

२१ पृष्ठ

अचर=जड़
पटतर=समान
हटकति=रोकती हूँ
बगर डगर=घर बाहर

२२ पृष्ठ

पेली=हटादी
अवर=और

२३ पृष्ठ

जनु...=मानो सायंकाल को सूर्यास्त में बादलों में चन्द्रमा की प्रभा निकली हो।
सुरसारिता=स्वर्गंगा
कंजावलि=कमलों की पंक्ति
मकरन्द=फूलों का रस

२४ पृष्ठ

झारी=सुराही
सिहात=प्रशंसा करता है
अतिशै=अतिशय
चिक्कन=चिकनी
मेचक=धुँघराले बाल

२५ पृष्ठ

ऐडिका=ऐड़ी
गुलाफ=पैर की हड्डी, टखना
हाटक=सोना
त्रिवलि=मुटापे के कारण पेट में तीन बल पड़ जाते हैं
नीलसयल=नील पर्वत
भृगुमद=भृगु ऋषि द्वारा मारी गई लात का चिह्न।

२६ पृष्ठ

अंगद=बाजू बन्द

२७ पृष्ठ

असित=काला
निकेत=धाम, घर
अंक=चन्द्रमा
नागनाह=शेषनाग

२८ पृष्ठ

दमामो=नगाड़ा

२९ पृष्ठ

निबरावत=हटाते हैं

३४ पृष्ठ

वात=वायुर
पट=वस्त्र।
तडित=बिज्जु।
जलद=मेघ।
मेरु=सुमेरू पर्वत।
शृंग=शिखर।
पखावज=झाँझ
चरो=चढ़ी हुई।
उघटत=प्रकट होना।
सुर=स्वर।
अनंग=कामदेव।
अनंग=निर्लिप्त, निष्काम।
सुखदानि=सुखदायक।
ललित=सुन्दर।
अनुमानि=विचार कर।
जुग=दोनों।
आनि=लाकर।

छहौ रस=अम्ल, तिक्त, कटु,
कषाय, मीठा, नमकीन
स्वकर=अपने हाथ से ।

३५ पृष्ठ

सगाई=सम्बन्ध ।
बौराई=पगली हो गई ।
जगजाइ=संसार में उत्पन्न हुआ

३६ पृष्ठ

मोद=हर्ष ।
सदाई=सदैव ।
तनया=पुत्री ।
बराई=संबन्ध जोड़ना ।
सयानी=चतुर ।
बिलग=बुरा अनुचित ।
जाँचत=माँगता है ।
अँचवन=आचमन करना
धाई=१ दौड़ कर, धाय ।
वदन=मुख ।

३७ पृष्ठ

पानि=पाणि, हाथ ।
सदन=गृह ।
पिका=कोकिला ।
दुतिया=द्वितीया

पृष्ठ ३८

मुकुट=दर्पण ।
करनि=हाथ में लेकर ।
वदन निहारत=मुख देखते हैं ।
पारत=लगना ।
बोध=सुध, ज्ञान ।

३९ पृष्ठ

अकथ=अवर्णनीय ।
नागर नट=कृष्ण ।
घटकी=हृदय की ।
श्रुती=१ वेद, कान ।
वर=श्रेष्ठ ।
नाकवास=१-स्वर्गवास,
नासिकास्थान ।
सटकी=हवा हो गई ।
सुमन जूथ=पुष्पों का समूह ।
पट=वस्त्र ।
त्रिविधि समीर=शीतल मंद
सुगंधित वायु ।
ठाहीं=ठाँव, स्थान में ।
चपलचख=चंचल नेत्र ।
गलवाही=गलवैय्या डालना ।

४० पृष्ठ

निरतत=नृत्य करते करते ।
अघाही=संतुष्ट होना ।
अवनि=पृथ्वी ।
नभ=आकाश ।
वय थोर=कम आयु के ।
पटपीत=पीला वस्त्र ।
गात=शरीर ।

परम रम्य=अत्यन्त सुन्दर।
राजत= सुशोभित।
पलोटत=दबाना।

४१ पृष्ठ

रुचि शुचि=मनमोहक स्वच्छ
सीली=शीलवती।
बिलमिरहे=कहीं अटक गये देर लगा दी।

४२ पृष्ठ

संकेत=गृह निर्दिष्ट स्थान।
उमहे=उमंग युक्त।
उलहे=लहलहाते थे।
आनन=मुख
निकेत=गृह
मोद=हर्ष
बिबि दगन=दो नेत्र
कच=केश

पृष्ठ ४३

दुति=कांति
तुला=तराजू
खीन=क्षीण
पीन=पुष्ट

पृष्ठ ४४

वय=आयु
वपु=शरीर
वसन=वस्त्र
समीर=वायु
पिककीर=कोयल, तोता

पृष्ठ ४५

गाड=गढ़ा
गाडकपोल=हँसते समय गालों में पड़ने वाला गढ़ा
दशन=दाँत

पृष्ठ ४६

टोही=टटोलना
मोल्यो=मोल ले लिया
माखै=रूष्ट होना
वृषभानुलली=राधा
हली=बलराम
अनुज=छोटा, भाई

पृष्ठ ४७

जलज=कमल

पृष्ठ ४८

मयन=कामदेव
पीतपिछौरी=पीताम्बरा
बधुटिया=वधू

पृष्ठ ४९

अचली=निश्चल
ललाम=सुन्दर
वाम=स्त्रियाँ
आगर=भंडार
अभिमति=मन वांछित

पगनि=पैर
रव=शब्द

पृष्ठ ५१

पलनि=पल में

पृष्ठ ५२

रन्ध=छिद्र
चिबुक=ढोडी
सरहति=प्रशंसा करती है।
आगरो=भंडार
निधान=निधि
गात=शरीर
वारि=जल
मज्जहि=स्नान करना।
उरनि=हृदयों में।
सरसान=हर्षित।

५३ पृष्ठ

अपर=दूसरा।
सराहि=प्रशंसा करना।
महामुद=बड़े हर्ष से।
संकुल=ढकी हुई।
विरहित=विहीन ।

५४ पृष्ठ

बयारी=वायु।
मनै=मनन ध्यान।
अनियारे=नुकीले।
मूल=जड़।
खनै=खोदना, नष्ट करना।
गात=शरीर।
सचराचर=जड़ चेतन सहित

५५ पृष्ठ

रचै=रास रचती हैं।
लचय लचै=लचक से लचकते हैं।
तरल=चंचल।
बयन=बैन, बचन।
विधुवदनी=चन्द्रमुखी।
अघहार=पाप नाशक।

५६ पृष्ठ

निगमन=शास्त्रों की।
मदन=कामदेव।
बोरै=डुबाते हैं।
कोरै=नेत्रों के कोने।

५७ पृष्ठ

अपरन=दूसरों को, अनन्य।
निशि=रात्रि
विपिन=बन
वर=श्रेष्ठ

५८ पृष्ठ

गह्वर=गहरी
आरतिगिरा=दुःख की वाणी
किनको=कितनी ही देर से
सौहे=सामने

थित=स्थित
तितै तितको=उधर का उधरही
गोवत=चुराना
मिसिकै=बहाना करके
अंसनि=कंधे
लेखै=देखती है
पखै=देखो
निमिषे=पलक

६० पृष्ठ

रङ्कहि=कंगाल को
परियंक=पलंग
रयन=रात्रि, रैन
अयन=गृह
होहुँ=मैं भी

६१ पृष्ठ

बोरै=डुबता है

६२ पृष्ठ

व्याज=बहाना
रजु=रस्सी रज्जु
सकेलो=कार्य में लाओ
अबिर=अबीर गुलाल
ठौर=स्थान
बहोर=फिर
प्रवीन=प्रवीण, चतुर

६३ पृष्ठ

मुद=मोद, हर्ष
प्रसन्य=प्रसन्न
अनन्य=अनोखी
समर=कामदेव, युद्ध
हय=अश्व, घोड़े

६४ पृष्ठ

जुग=युगुल, दो
मार=कामदेव
सयन=सैन, भौंह
तुपक=तोप
निशान=ढोल

६५ पृष्ठ

चलैपराई=भाग चलै
कादर=कायर
धराहिधाइ=दौड़कर पकड़ते हैं

६६ पृष्ठ

उपाइ=उपाय
धाई=दौड़ी

६७ पृष्ठ

अथाह=अगाध
ओरी=ओर, तरफ़

६८ पृष्ठ

मोर=मोड़, मोड़ना
मोसन=मुझ से

६६ पृष्ठ

वपुष=शरीर
विधि विरचिता=सृष्टि

गिरा=सरस्वती

७० पृष्ठ

असित=काला
नीरद=मेघ
अमीकर=अमृत का
अहिप जुग=दो सर्पराज
अहेरी=शिकारी
त्रिवाद=दैहिक दैविक भौतिक
जुड़ानी=शांत हो जाते है

७१ पृष्ठ

घरहि रहि=गूँज रही
सुरसरति=गंगा
आवर्तनी=भँवर
उदधि=समुद्र
रुष=रुख
उद्दीपनी=उत्साहित करने वाली
गाथ=गाथा, कथा
सषि=सखी
षटपदी=भौंरी

७२ पृष्ठ

सोम=चन्द्रमा
सिली मुख=वाण
असितासित=काले, स्वेत

७३ पृष्ठ

लंगर=जहाज का ठहरना
महोदधि=बड़े समुद्र
मुयो=मरे हुये को, या मरा हुआ भी
बानि=ढंग प्रकार

७४ पृष्ठ

वित=वित्त, धन
अहर निसि=दिन रात
तुरंगनि=घोड़ो पर

७५ पृष्ठ

बियारी=भोजन
उश्न=ऊष्ण
प्रछालि=धो कर
बीरी=पान

पृष्ठ ७६

सोलषि=वह देख कर

७८ पृष्ठ

पटतरत=समानता करना
निर्बान=मोक्ष

७९ पृष्ठ

नष=नाखून

८० पृष्ठ

पन्नगी=सार्पिणी

८१ पृष्ठ

तोम=समूह
तम=अंधकार
समुचंद=चन्द्रसमान

सदहि=सदैव

८१ पृष्ठ

दोह=इच्छा

८४ पृष्ठ

पियूष=अमृत

८५ पृष्ठ

दिनरव=सूर्य

८७ पृष्ठ

महतु=अधिक
धैन=गैय्या
अलकै=केश
वारिजात=कमल

८८ पृष्ठ

छति=हानि
दुचिताई=भ्रम
छित=पृथ्वी
औसर=अवसर

९१ पृष्ठ

जथोचित=ठीक
पोही=गूँथी हुई
जोही=देखा
वगिचवा=वगीचा

९६ पृष्ठ

वियो=दूसरा
समाधा=समाधि

९७ पृष्ठ

मनमथ=कामदेव

९८ पृष्ठ

कुंतल=केश
सरबसु=सर्वस्व
उमाहु=उमगता है
उरदाह=हृदय की आग

१०० पृष्ठ

भीनौ=डूबा हुआ
डगर=मार्ग
खोरी=गली
रोरी=रोली
बेसरि=बुलाक
बिरचो=बनाया

१०३ पृष्ठ

अखारो=अखाड़ा
बैस=वायु
प्रबीनौ=चतुर
अलिन=सखियों में
मलिन=अच्छी
मरकत=मणि
कनक=स्वर्ण
ठिलौ=जुड़ा

१०४ पृष्ठ

वादिन=उस दिन
गिलौ=गिला, शिकायत

टोनौ=जादू
सलौनौ=सुन्दर
होनौ=होना था
सौनौ=सोना
सोहाग=१ सुहाग २ सुहागा

१०५ पृष्ठ

निसाहो=रात में
सदन=गृह
बौराई=पगली हुई
बिवस=बेबस

१०६ पृष्ठ

नूपुरा=१ घुँघरु बिछुए
कछुनी=तगड़ी
किनाकिनी=घुँघरु
आछै=सुशोभित
कौस्तुभ=कृष्ण की मणि
खलक=दुनियाँ, संसार
खौर=चन्दन रेखा
सविता=सूर्य
म्हारौ=हमारा
बसन=वस्त्र

१०७ पृष्ठ

लोल=चंचल
अडोल=दृढ़
मुहि=मुझे

१०८ पृष्ठ

हीकी=हृदय की
हूलै=पीड़ा देती है

रसना=जीभ
गहन=टेक
गही=पकड़ी
त्वचा=खाल
भूर=घना
रतिपति=कामदेव
मयंक=चन्द्रमा
निकाई=शोभा
लसत=शोभित

१११ पृष्ठ

मैन=कामदेव

११२ पृष्ठ

चंग=पतंग
सहेली=सखी
दादर=दादरा राग

११३ पृष्ठ

द्वादसौ=बारह
राजि=पंक्ति
अवलि=पंक्ति

११४ पृष्ठ

अनयेषी=पलक न लगना
विसेखी=विशेष

११५ पृष्ठ

बरबार=श्रेष्ठ जल

११६ पृष्ठ

अनुहरत=समानता करना

११८ पृष्ठ

बोरी=डुबाना